

# इस्लामी तालीम

## तर्जुमा तहज़ीबुल इस्लाम

लेखक: अल्लामा मजलिसी

रूपांतरणकर्ता: हैदर मेहदी एम.ए.

नोट: ये किताब अलहसनैन इस्लामी नेटवर्क के ज़रीए अपने पाठको के लिए टाइप कराई गई है और इस किताब में टाइप वगैरा की गलतियों को सही किया गया है।

[ALHASSANAIN.ORG/HINDI](http://ALHASSANAIN.ORG/HINDI)

बिस्मिल्लाह हिर्हमा निर्हीम

## पेश लफ़्ज़

रसूले अकरम (स.अ.) ने फ़रमाया है:

“मैं बनी नौ-ए-इन्सान में आला अख़लाक़ कि तकमील के लिए भेजा गया हूँ।

पैगम्बरे इस्लाम हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स.अ.) और आपके फ़र्ज़न्दाने गिरामी (अहले बैत (अ.स.)) इमान और हुस्ने सीरत के उन आला मुक़ामात पर फ़ायज़ है कि उनका किरदार बनी नौ-ए-इन्सान के लिए मिसाल और नमूना बन गया है। इन बुजुर्गवारों ने लोगो को एक नया रास्ता दिखाया और इन्तेहाई ना-मसाइद हालात के बावाजूद एक अज़ीमुशान इन्क़ेलाब बरपा किया। उन्होंने मुआशरे की पेशरफ़्त एक खास मक़तबे फ़िक्र व अमल क़ायम किया, लोगों को उसकी पैरवी करने की दावत दी, उन्हें एक शानदार मुस्तक़बिल की नवेद सुनाई और उनके दिलों में उम्मीद, खुशी, जोश और वलवला पैदा किया ताकि वो अपनी ग़लत आदत तर्क कर दें और ऐसी बा-मक़सद ज़िन्दगी गुज़ार दें जो दुनिया और आख़ेरत में उनकी फ़लाह की ज़ामिन है।

अहलेबैत (अ.स.) के इस बुलन्दो बाला मरतबे को समझने के लिए ज़रूरी है कि कुर्आने मजीद की तालीमात और मासूमीन (अ.स.) की अहादीस से रूज़ूअ किया जाये जिनको इल्मे हदीस के अज़ीम इस्क़ालर अल्लामा मजलिसी (मुतवफ़्फा 1111

हिजरी) ने अपनी किताब बेहारूल अनवार के मुखतालिफ़ अबवाब में जमा कर दिया है।

चूँकि दर्सगाहों के लिए मुकर्रर करदा निसाब के मुताबिक़ इस मौजू पर एक निस्बतन मुख्तसर किताब की ज़रूरत थी लिहाज़ा हमने अल्लामा मरहूम की किताब शाय़ा करने का फ़ैसला किया, जिसको फ़ाज़िल मुसन्निफ़ ने आइम्मा-ए-मासूमीन (अ.स.) की अहादीस की बुनियाद पर तरतीब दिया है। चूँकि यह किताब भी खासी मुफ़स्सिल थी, लिहाज़ा हमने इख़्तेसार की ज़रूरत के तहत मोहदिस कुम्मी (मुतावफ़का 1359 हिजरी) के मुत्तब करदा तलख़ीस को अपना माख़ज़ बनाया उसमें से कुछ अहादीस का इन्तेसाब करके उसे मौजूदा शक़ल में शाय़ा किया है।

हमें उम्मीद है कि यह मुख्तसर रिसाला तलबा के लिए बिल-ख़ुसूस और जुमला मोमेनीन के लिए बिल उमूम मुफ़ीद साबित होगा।

यह किताब ज़ाम-ए-तालिमाते इस्लामी करांची पाकिस्तान से उर्दू में छपी है और अब हमारा इदारा इसे हिन्दी रस्मुलख़त में शाय़ा करने का शरफ़ हासिल कर रहा है।

नाशिर

सैय्यद अली अब्बास तबातबाई

अब्बास बुक ऐजन्सी, लखनऊ

बिस्मिल्लाह हिर्रहमा निर्हीम

अल्हमदो लिल्लाहे तआला, हमदन युवाज़ी रहमतहू व युकाफ़ी नेअमतहू,  
वस्सलातो वस्सलामो अला सय्येदे खल्केही, व हमेले रिसालतेही, अस-सादेक़िल  
अमीने मोहम्मदिन व अला असफ़ेया -इल्लाहे व अविद्धिदाएही, अहले बैतिन  
नुबुव्वते, व अला अहिब्बा इल्लाहे व औलियाएही, असहाबिर्सूलिल अबरार,  
अद्दुआतिल अख्यार, व अला जमी-इस्साएरीना एला यौमिद्दीन।

## लिबास

इस हकीकत के बावजूद कि इस्लाम ने अपने पैरुओं को ऐश व इशरत की  
ज़िन्दगी गुज़ारने से मना फ़रमाया और फ़ज़ीलत, रूहानियत नीज़ आख़ेरत की  
रहमतों की जानिब उनकी रहनुमाई की है - उसने दुनिया की नेमतों से परहेज़  
करने और राहेबाना ज़िन्दगी गुज़ारने की भी मुमानेअत की है - चुनाँचे कुर्आने  
मजीद राहेबों के तर्ज़े-फ़िक्र की वाज़ेह तौर पर मुखालफ़त करते हुए फ़रमाता है:

“कह दो कि तुम्हें अच्छा लिबास पहनने और अल्लाह नें जो पाकीज़ा चीज़ें  
अपने बन्दों को एनायत की हैं उनके खाने सेकिसने मना किया है?”(सुर-ए-  
एअराफ़, आयत 32)

इस तरह इस्लाम नें अपने पैरुओं को अच्छा और आबरूमन्दाना लिबास पहनने  
का हुक्म दिया है। पस एक मुसलमान को चाहिये कि अपनी हैसियत के मुताबिक़  
उम्दा और साफ़ सुथरा लिबास पहने ब-शर्ते कि वह लिबास जायज़ तरीके हासिल

किया गया हो अगर वह जायज़ ज़राय से अपने लिए उम्दा लिबास मोहय्या न कर सके तो फिर उसे चाहिये कि अपने हुदूद में रहते हुए शायस्तगी के साथ मामूली लिबास पहने रहे।

इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) ने फ़रमाया है:

“अल्लाह जमील है, वह ख़ूबसूरती को पसन्द करता है और अफ़सुर्दगी को नापसन्द फ़रमाता है, इसलिए कि जब वह अपने बन्दों को नेमतें अता करता है तो वह उनपर नेमतों के असरात भी देखना चाहता है” -

जब पूछा गया कि इन्सान खुदा-ए-तआला की नेमत के असर का इज़हार कैसे कर सकता है? आपने जवाब दिया: साफ़ सुथरा लिबास पहनो और खुशबू इस्तेमाल करो, घर की सफ़ेदी कराओ और उसकी ग़लाज़त दूर करो, अल्लाह ताला गुरुबे आफ़ताब से पहले (सूरज डूबने से पहले) चिराग़ जलाने को पसन्द करता है, ऐसा करने से इफ़लास (ग़रीबी) दूर होता है और यह रिज़क़ में फ़ेराख़ी का मोज़िब बनता है-

इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) से मर्वी है एक मोअतबर हदीस में कहा गया है:

“अच्छे कपड़ों का इस्तेमाल दुश्मन को पस्त करता है-

बदन पर तेल मलना, ज़ेहनी खिचाओ और परेशानियों को कम करता है। बालों में कँघा करना दाँतों को मज़बूत करता है, रोज़ी में इज़ाफ़े (बढ़ोतरी) का सबब बनता है और कुव्वते-बाह को बढ़ाता है।

सबसे बेहतरीन सूती कपड़ा है और उसके बाद कतान है।

1- हमेशा ऊनी कपड़े पहनना और उन्हें अपना मुस्तकिल लिबास करार देना मकरूह है, बिलखुलूस उस सूरत में जब यह कपड़े दूसरों पर घमण्ड जताने के लिए इस्तेमाल किये जाएँ।

2- रसूले अकरम (स.अ) ने उन लोगो पर नफरीन (बुराई) की है जो अपने लिबास को दूसरों पर फ़ज़ीलत और फ़ौक़ियत का ज़रीया बनाते हैं। ((इस्लाम मुआशिरे (समाज) की तरबियत इस अन्दाज़ से करता है कि फ़ज़ीलत का मेयार फ़क़त तक़वा हो।))

3- मर्दों के लिए ख़ालिस रेशम और ज़र-तार कपड़े का लिबास पहनना हराम है।

4- मर्दों के लिए औरतों जैसा लिबास पहनना हराम है उसी तरह औरतों के लिये भी मर्दों जैसा लिबास पहनना जायज़ नहीं है। ((इस्लाम यह नहीं चाहता कि मर्द और औरत के दरमियान मौजूद फ़ितरी फ़र्क नापैद हो जाए।))

5- मोमिनीन के लिए काफ़िरों का मख़सूस लिबास पहनना हराम है। ((इसके बर-अक्स वह इस बात पर ज़ोर देता है कि यह फ़र्क़ लिबास तक के मामले में भी बरकरार रहे, ताकि मुआशिरे का हर फ़र्द अपने अपने फ़रायज़ अपनी फ़ितरत के मुताबिक़ अन्जाम दे। यह ज़रूरी है कि हर क़ौम का एक ख़ास तमद्दुन का एक हिस्सा है इसलिए कुफ़्रार के लिबास से मुशाबे (मिलता-जुलता) लिबास का

इस्तेमाल एअतेमाद नफ़स (आत्म विश्वास) के फुक़दान (समाप्ति) और अग़यार (ग़ैर का बहू) पर इन्हेसार (निर्भरता) की अलामत है।))

6- लिबास के लिए बेहतरीन रंग सफ़ेद है और उसके बाद ज़र्द का नम्बर आता है फिर बित-तरतीब (क्रमानुसार) सब्ज़, हल्का सुर्ख, हल्का नीला और हल्का सब्ज़ रंग है।

7- गहरे सुर्ख और सियाह रंग का लिबास (खास तौर से नमाज़ पढ़ते वक्त) पहनना मकरूह है।

8- जिस लिबास से तकब्बुर का इज़हार होता हो। वह नापसंदीदा है।

9- अमामे का इस्तेमाल मुस्तहब है।

10- अमामा खड़े होकर बाँधना और उसका सिरा तहतुल हनक़ (ठुड़ी के निचे से) गुज़ारना मुस्तहब है।

11- ऐसी टोपियाँ या हैट पहनना मकरूह है जो ग़ैरे मुस्लिमों से मख़सूस हैं जब आप पाजामा और ज़ेरे जामा पहनें तो क़िबला-रू (क़िबला की तरफ़) होकर बैठ जायें और यह दुआ पढ़ें:

“अल्लाहुम्मस-तुर-औरती व आमिर रौ-अती व अ-इफ़्फ़ा फ़ज़ी वला तज़अल लिश-शैताने फ़ीमा रज़क़तनी नसीबवं वला लहू एला ज़ालेका वुसूलन फ़-यसनआ ले-यल मकाएदा व यो- हय्ये-जनी ले-इरतेकाबे महारेमेका।”

ऐ परवरदीगार ! मेरा बदन ढाँप दे, मेरे आज्ञा की हिफाज़त कर, मेरी इफ़्त महफूज़ फरमा और शैतान को मुझसे दूर रख ताकि वह मुझे उन बुरी बातों की तरफ़ ना खींचे जो तेरे अहकाम के खिलाफ़ है।

जब आप लिबास पहनने लगे तो यह दुआ पढ़े:

“अल्लाहुम्मज-अलहो सौबा युमनिंव व तक़वा व तुक्रा व बरकतिन अल्लाहुम्मर जुक़नी फ़ीहे हुस्ना इबादतेका व अमा-लल लेता-अतेका व अदा-अ शुक्रे नेअ-मतेका-“

अल्हम्दो लिल्लाहिल लज़ी कसानी मा उवारी बेही औरती व अता-जम्मलो बेही फ़िन्नासे-“

“या अल्लाह ! इस कपड़े को मेरे लिए बरकत, तक़वा और सवाब का मोज़िब बना-

या अल्लाह ! मुझे तौफ़ीक़ दे कि जब मैं यह लिबास पहनूँ तेरी इबादत मुकम्मल तौर पर बजा लाऊँ, तेरे अहकाम की इताअत करूँ और तेरी नेमतों का शुक्र अदा करूँ। तमाम तारीफ़े उस अल्लाह के लिए जिसने मुझे ऐसा लिबास दिया है जो मुझे ढाँपता है और लोगो के दरमियान मेरी इज़्जत और आबरू का ज़रिया है। “

जब आप लिबास पहनें तो वुजू करके दो रकअत नमाज़ अदा करें और फिर कहे:

“ला-हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम,”

“कोई ताकत और कुव्वत नहीं है सिवाए उसके जो अल्लाह से (मिलती) है, वही बलन्द तरीन और बुजुर्गतररीन है। “

12- रात के वक्त कपड़े उतार देना और बर्हना हो जाना मकरूह है।

13- जब आप कपड़े उतारने लगे तो “बिस्मिल्लाह” पढ़े।

14- कपड़े उतारने के बाद उन्हें इधर-उधर न फेंके।

15- जब आप लिबास पहनने का इरादा करें तो नियत बाँधें कि मैं यह लिबास अपनी सतर पोशी मुसलमानों के लिए अपनी आरायश और अल्लाह की नेमतों के इज़हार की खातिर पहन रहा हूँ क्योंकि अल्लाह आरायश को और नेमतों के इज़हार को पसन्द फ़रमाता है।

16- जब आप लिबास पहनें तो उसकी इब्तेदा (शुरूआत) दायें जानिब से और खात्मा बायें जानिब पर करें, जब आप लिबास पहन चुकें तो अल्लाह की हम्द ब्यान करें। ((कारी ख़ूब आगाह है कि यह अखलाक़ और आदाब एक मुसलमान की ज़िन्दगी के हर शोबे में अपने अल्लाह के कितने करीब ले आते हैं।))

17- जब आप नया लिबास खरीदें तो पुराना लिबास किसी और हाजतमन्द को दे दें। कोट और कमीज़ के बटन खुले रखना इस्लामी आदाब के खिलाफ़ है। जूतों के लिए बेहतरीन रंग ज़र्द है, इसके बाद सफ़ेद भी मुनासिब है। यह रविश (तरीका) मुस्तहब है कि जूतों के तले का दरमियानी हिस्सा फ़र्श को ना छुए। ((मौजूदा इल्मे हिफ़ज़े सेहत भी इस बात की ताईद करता है।))

18-जूतों का एक अच्छा जोडा वह है कि जो इन्सान के पाँव को चोट से महफूज रखे और नमाज़ के लिए वुजू करने में रूकावट ना बने।

19- ऐसे जूते नही पहनने चाहिये जो तकब्बुर का मोजिब हो।

20- जूते पहनते वक़्त इब्तेदा दाये पाँव से करें और यह दुआ पढ़ें।

“बिस्मिल्लाहे सल्लल्लाहो अला मोहम्मदिव व आले मोहम्मदिव व वत्ति क़दमय्या फ़िद्दुनिया वल आखेरते व सब्बितहुमा अलस सिराते यौमा तज़िल्लो फ़ीहिल अक़दाम। “

“मैं अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ – या अल्लाह ! दुरूद और सलाम भेज मोहम्मद (स.) पर और आले मोहम्मद (स.) पर, मेरे क़दम इस दुनिया में मज़बूत कर दे और क़यामत के दिन भी मेरे दोनो पाँव को जमाये रखना जब लोग पुले सिरात पर से जहन्नूम में जा गिरेंगे।”

21- जब आप जूते उतारने लगे तो यह दुआ पढ़े:

“बिस्मिल्लाहे अल्हम्दो लिल्लाहिल लज़ी रज़क़नी-मा-अक़ी बेही मिनल अज़ा- अल्लाहुम्मा सब्बितहुमा अला सिरातेका वला तज़िल लहुमा अन सिरातेकस सविय्ये,  
”

“मैं अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ तमाम तारीफ़े अल्लाह के लिए हैं जिसने मुझे यह चिज़े इनायत की जो मेरे दोनो पाँव को तकलीफ़ से महफूज रखती हैं।

या अल्लाह ! जहन्नूम के ऊपर वाक़ेअ पुले सिरात पर मेरे दोनो पाँव को जमाये रखना और उन्हें सीधे रास्ते से इधर-उधर रपटने नही देना।”

## अरायशे जमाल

एक और पहलू जिसे इस्लाम ने बड़ी अहमीयत दी है, वह आरायशे जमाल यानी “बनाओ-सिंघार” है।

इस्लाम कहता है, एक औरत को चाहिये कि वह अपने शौहर की खातिर उम्दा तरीके से बनाओ-सिंघार करे ताकि उसकी निगाहें और ख्यालात दूसरी औरतों की तरफ न जायें।

इसी तरह मर्दों के लिए भी ज़रूरी है कि वह अपनी बीवियों की खातिर आरायशे करें ताकि वह दूसरे मर्दों की जानिब मायल न हों ओर यूँ उनकी इफ़्त और पाकदामनी में इजाफ़ा हो।

1- मर्दों और औरतों को दायें हाथ में अँगूठी पहनने की ताकीद की गई है।

2- इन्सान को चाहिये कि अँगूठी पहनते वक़्त यह दुआ पढ़े:

“अल्लाहुम्मा सच्चिमनी बे-सीमाइल ईमाने वखतिमली बे-खैरिं वजअल आक़ेबती एला खैरिन इन्नाका अन-तल अज़ीज़ुल हकीमुल करीम, ”

“या अल्लाह ! ईमान की निशानियों को मेरी पहचान का मोज़िब बना- मेरा खातिमा बिल-खैर कर और आखेरत में भी मेरे लिये बेहतरी का सामान पैदा कर- बिला शुबा तू कुदरत वाला, हिकमत वाला और मेहरबान है,”

3-यह हिदायत भी कि गई है कि अँगूठी के पत्थर पर मुनदर्जा-ज़ैल अल्फाज़ खुदवाये जाये:

“माशाल्लाहो ला-कुव्वता इल्ला बिल्लाहे अस्तग़फ़ेरुल्लाहा,”

“अल्लाह जो चाहता है सो करता है, कोई ताक़त ओर कुव्वत नहीं है सिवाय उसके जो अल्लाह से (मिलती) है मैं अल्लाह से बख़्शिश का तलबगार हूँ,”

4- औरतों और बच्चों को सोने और चाँदी के ज़ेवरात पहनने में कोई हर्ज नहीं।

5- इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स) से रवायत है कि आपने फ़रमाया:

“औरत के लिये अपने बनाओ सिंघार को तर्क करना मुनासिब नहीं, चाहे वह एक हार पहनने तक ही क्यों ना महदूद हो। ”

6- मर्दों को सोने के ज़रिये अपनी अरायश करने से बचना चाहिये, चाहे वह उनकी तलवार या कुर्आने मजीद में ही क्यों ना हो।

7- रवायत है कि आँखों में सुरमा लगाने के कई फ़ायदे हैं।

8- आँखों में सुरमा लगाते वक़्त यह दुआ पढ़े।

“अल्लाहुम्मा नत्विर् बसरी वज़अल फ़ीहे नूरन अवसिर बेही हक्का वहदेनी एला सिरातिल हक्के व अर्शिदनी एला सबीलिर्शादे अल्लाहुम्मा नत्विर् अलय्या दुनयाया व आख़ेरती,”

या अल्लाह ! मेरी आँखें रोशन कर, मुझे ऐसी रौशनी अता फ़रमा कि तेरे अद्ल को देख सकूँ, तू मुझे सीधे रास्ते पर रख और मुझे नेकी की राह पर चलने का शऊर (अक़्ल) बख़्श दे-

या अल्लाह ! मुझे इस दुनिया में और आख़ेरत में भी रौशनी अता फ़रमा।

9- जब आप आईने पर निगाह डालें तो यह दुआ पढ़े:

“अल्लाहुम्मा कमा हस्सन्ता खल्की फ़हस्सिन खुलुकी व रिज़्की,”

या अल्लाह ! जिस तरह तूने मुझे अच्छे खद व खाल दिये हैं उसी तरह अपनी मेहरबानी से मुझे आला अखलाक़ ओर पाकीज़ा रोज़ी भी बख़्श दे।

खुर्द व नौश (खाना पीना)

रोटी और पानी इन्सान की बुनयादी ज़रूरत है। इस्लाम उम्दा और लज़ीज़ खुराक और सेहत बख़्श व खुश जायका मशरूबात के इस्तेमाल से मना नहीं करता।

कुर्आने मजीद फरमाता है:

ऐ ईमान वालों! जो पाक चीज़े हमने तुम्हें ब-तौरै रिज़्क दी है उनमे से खाओ और अल्लाह का शुक्र अदा करो। 13(सूर-ए-बकरा, आयत 132)

खाने पीने के हलाल होने का आम मेयार उनका तय्यब (पाक) होना है- यानि वह पाक, साफ़, लज़ीज़ और सेहत बख़्श हों-

खुद लजीज़ खाने खाना, दूसरों को खिलाना और यह कोशिश करना कि वह खालिस और पाक हों- यह एक बड़ी अच्छी बात है।

1- इन्सान को चाहिए कि वो चीज़े खाये पिये जो हलाल हों।

2- इन्सान को इतना भी नहीं खाना चाहिये कि वह उसे अल्लाह की इबादत से बाज़ (रोक) रखे।

3- जानवरों की तरह खाने पीने ही में न लगे रहें, इसके बर-अक्स (विपरीत) खाने पीने से आपका मकसद अल्लाह की इबादत के लिए कुव्वत (ताकत) का हुसूल होना चाहिये।

4- इन्सान को खाने पीने के मामले में फुज़ूल खर्च नहीं होना चाहिये।

5- जब आप खा-पी कर शिकम् सेर हो जायें तो फिर कुछ न खायें।

6- जब इन्सान शिकम् सेर हो जाता है तो वह उसके फ़साद और बगावत पर मायल होने का मूजिब बन जाता है।

7- नाश्ते और दोपहर के खाने के बीच कुछ और खाना मुनासिब नहीं है।

8- नाश्ता न करना और दोपहर का खाना न खाना सेहत के लिये मुजिर है।

9- खाना खाने से पहले और खाना खाने के बाद हाथ धोना और कुल्ली करना सुन्नत है।

10- जब खाना चुन दिया जाये तो मुनासिब है कि आप “बिस्मिल्लाह” पढ़ें और खाना शुरू कर दें और जब खा चुके तो थोड़ा नमक मुहँ में डाल लें।

अपने परवरदिगार के सामने इज्ज के तौर पर आपको दस्तरखान पर गुलामों की तरह अदब से बैठना चाहिये।

11- (किसी मुसलमान को शरीक न करना) अकेले ही अकेले खाये जाना मकरूह है।

12- नौकरों के साथ मिलकर खाना और उसी तरह फ़र्श पर बैठकर खाना सुन्नत है।

13- नजिस और बदकार लोगों के साथ खाना खाने से परहेज़ करें हमेशा कोशिश करें कि नेकूकार सालेह (नेक) और आलिम लोगों के साथ खाना खायें।

14- खाने पीने के लिए सोने और चाँदी के बर्तनो की इस्तेमाल हराम है।

15- एक ऐसे दस्तरखान से खाना हराम है जिसमें खाने के साथ शराब भी पिलाई जाये।

यह रवायत भी आयी है कि ऐसी ज़ियाफ़त में खाना पीना हराम है जहाँ हराम चीज़े इस्तेमाल की जायें या कोई और ममनूअ (मना) बात मसलन ग़ीबत (बुराई) की जाये।

16- अपने दस्तरखान पर सब्ज़ियों के साथ सिरका भी इस्तेमाल करें।

17- सख्त गर्म खाना कभी ना खायें।

18- खाने पीने की चीज़ो पर फूँक मारना मकरूह है। खाने से पहले फलों को धो लेना चाहिये और पानी ढ़ाक कर रखना चाहिये।

19-बासी और सड़ा हुआ खाना नही खाना चाहिये। रोटी की बे-हुरमती और बे-अदबी न करें।

20-जब खाना दस्तरखान पर आ जाये तो बिना देर किये हुए खायें और मजीद किसी चीज़ का इन्तेज़ार न करें।

21-रोटी को मत सूँघे और उसपर हाथ भी न फेरें।

22-जौ की रोटी खाना तर्क ना करें।

23-दस्तरखान पर जो चीज़ आपके सामने हो वह खायें और दूसरों के आगे से ना उठायें।

24-छोटे छोटे निवाले लें और उन्हें चबाकर खायें। खाने में दूसरो के चेहरों पर नज़र न डालें।

25-जब आप खाने में किसी दीनी भाई के साथ हों तो खूब सेर हो कर (पेट भरकर) खायें और जो चीज़ें उसे नापसन्द हो उससे परहेज़ करें।

26-मेहमानों को दस्तरखान पर ग़ैर-ज़रूरी तकल्लुफ़ात में उलझाना अच्छी बात नहीं।

27-खाने की जो चीज़ दस्तरखान पर गिर जाये उसे उठाकर खा लें।

28-खाने के बाद दाँतों को खेलाल करें।

29-दाँतों में खेलाल करने के बाद तीन बार कुल्ली करें।

30-दीनी भाईयों को खाने की दावत देना और उन्हें खाना खिलाना बड़ा नेक काम है।

31-जो शख्स खाना खिलाये उसके हक में दुआ-ए-खैर (अच्छाई की दुआ) करना मुस्तहब है।

32-जब आपका कोई दीनी भाई आपसे मिलने आये तो जो कुछ घर में मौजूद हो उसके लिए ले आये जो चीज़ मौजूद न हो उसकी तय्यारी का एहतेमाम न करें।

33-आपको अपने एक दीनी भाई से जितनी ज़्यादा मोहब्बत हो उसके यहाँ उतना ही ज़्यादा खाना खायें।

रवायत है कि एक सखी शख्स अपने एक मेज़बान के यहाँ ज़्यादा खाना खाता है ताकि वह भी उसके यहाँ ज़्यादा खाये।

34-रवायत है कि जब रसूले अकरम (स.अ) मेहमानों के साथ बैठकर खाना खाते तो सबसे पहले खाना शुरू करते और सबके बाद हाथ खींचते थे ताकि कोई मेहमान भूखा न रह जाये।

(मुफ़ज़ज़ल इब्ने उमर कहते हैं कि उन्होंने इमाम जाफरे सादिक (अ.स.) की खिदमत में दर्द चश्म (आँख में दर्द) की शिकायत की तो इमाम (अ.स.) ने उनसे फ़रमाया कि जब वह खाने के बाद हाथ धोयें तो वही गीले हाथ अपनी भों और पपोटों पर लगायें और तीन मरतबा यह दुआ पढ़ें:

तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो एहसान करता है इन्सान को खूबसूरत बनाता है उस पर अपनी नेमतों की बारिश करता है और उसे बुलन्द करता है। 14

35-एक रवायत में है कि इन पाँच मौकों पर ज़ियाफ़त का एहतमाम करना और लोगों को दावत देना मुस्तहब है।

(1) शादी (2) अक्रीका (3) लड़के का ख़त्ना कराना (4) मकान ख़रीदना या नया मकान बनाना (5) सफ़र से घर लौटना

36-किसी ऐसी ज़ियाफ़त में शरीक होना मना है जो खास तौर पर दौलत मन्द लोगों के लिये दी गई हो।

## खुदारी

रसूल अकरम (स.अ.) का इरशाद है कि आठ किस्म के लोग लानत के काबिल हैं।

- (1) वह शख्स जो बिन बुलाये किसी के यहाँ खाने में शरीक हो जाये।
- (2) वह मेहमान जो मेज़बान पर हुक्म चलाये।
- (3) वह शख्स जो अपने दुश्मन से भलाई की उम्मीद रखे।
- (4) वह मालदार शख्स जो खुद कमीना और कंजूस हो फिर भी दूसरो से एहसान की उम्मीद रखे।

(5) वह शख्स जो दूसरो की बातों में बिला -इजाज़त दखल अंदाज़ करे जब कि वे कोई राज़दाराना गुफ़्तुगू कर रहे हों

(6) वह शख्स जो अहले इक्रदार (मालदार) की मुनासिब इज़ज़त न करे।

(7) वह शख्स जो ना अहल लोगों की सोहबत में बैठे।

(8) वह शख्स जो उस आदमी से गुफ़्तुगू करे जो उसकी बातों पर मुनासिब तवज्जोह नदों।

एक और हदीस में आया है कि (1) इन्सान फ़क़त उन लोगों को खाने की दावतदे जिन्हें वह सिर्फ़ अल्लाह की खातिर दोस्त रखता है

(2) मेहमान की ज़्यादा मुददत तीन दिन है -अगर कोई मेहमान इससे ज़्यादा दिनों तक ठहरे तो उसका खाना पीना मेज़बान का सदका शुमार होगा।

(3) मेहमान के साथ भलाईसे पेश आना और उसे अज़ीज़ (दोस्त) रखना मुस्तहब है

(4) मेहमान का एक ग़क़ यह है कि आप उसे एक खेलाल मोहय्या करें और जब वह रूख़सत हो तो उसे घर के दरवाज़ तक छोड़ने जाये

(5) जब तक कोई शख्स आपको बुलाये न उसके खाना खाने न जायें।साहिबे खाना पर हुक्म न चलाये। वह जहाँ बैठने को कहे वहीं बैठें। अगर आप को किसी जियाफ़त में शिरकतकी दावत मिले तो उसे कुबूल करले।

## पीने का पानी

इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) ने फ़रमाया

ठंडा पानी ह्रारते बदनको कम करता है मतली को दूर करता है, और गर्मी से बचाता है।

आपने ये भी फरमाया

गर्म पानी हर क्रिस्म के दर्द को दुर करता है और किसी लिहाज़ से भी मुज़िर नहीं होता।

पानी पीते वक़्त यह दुआ पढ़नी चाहिये सलवातुल्लाहे अ-लल हुसैने व अला अहले बैतेही बैतही वअसहाबेही व लानतुललहे अलाक्रातेलीहे व आदाएही,,

अल्ला ताला रसूले अहलेबैत (अ.स.) पर और असहाब पर अपनी रहमतेँ नाज़िल फ़रमाये और इमाम हुसैन (अ.स.) के कतिलों और दुश्मने पर अपनी लानत बरसाये।

(1) रवायत है कि चाहे ज़मज़म (ज़मज़म कुँआ) का पानी . बारिश का पानी और दरिया -ए -फ़ुरात का पानी बहुत से फ़ज़ीलत और फ़वायद का हामिल है।

(2) पानी रात के वक़्त बैठकर और दिन के वक़्त खड़े होकर पीना चाहिये।

(3) इमाम अली (अ) ने फ़रमाया है कि इन्सान को बारिश कापानी पीना चाहिये क्यें यह बदन को पाक करता है और तमाम दुख -दर्द दुर करता है।

(4) जब आप कोई मशरूब (पीने वाली चीज़) पीने लगे तो - बिस्मिल्लाह पढ़े, जब पीचुके तो -अलहम्दो लिल्लाह .कहे। फिर इमाम हुसैन (अ) और उनके अहलेबैत और असहाब को याद करे।

(5) पानी आहिस्ता आहिस्ता पिये और उससे अपना मुँह न भर लें।

(6) सारा पानी एक बार में न पी जायों बल्कि तीन बार ठहर के पिये।

## आदाबे तजवीज

बीवी या शौहर का इन्तेखाब (पत्नि या पति का चुनाव)

इस्लाम ने मुआशेरती निज़ाम में तजवीज केमाले को बड़ी अहमियत दी है। यह दीन राहेबाना ज़न्दगी बसरकरने की तल्कीन नहीं करता इसके बर अक्स यह अज़दवाज की तारीफ करता है क्यों कि यह अम्बिया (अ.स.) की सुन्नतों में से एक सुन्नत है। ता हम यह याद रखना ज़रूरी है कि निकाह का मकसद फ़क़त जीन्सी श्वाहिश की तसकीन नहीं होना चाहिये बल्कि उसका अक्वलीन (पहला) मकसद ससालेह और फ़र्ज -शेनास औलाद का हुसूल होना चाहिये ताकि हक़ व सदाक़त के पैरोओं (अनुयाइयों) की तादाद में इजाफ़ा हो .।

रसूले अरक़म (स.अ.) ने फ़रमाया .

मैंने तुम्हारी दूनिया मे तीन चीज़ों की को चुना है. (1) खुशबू (2) औरत और (3) नमाज़ कि जो मेरी आँख की ठंडक है।

इन्नी अखतारो मिन दुनियाकुम सलासतन (1.) अत- तय्येबा (2.) वन -  
निसाआ व कुर्रता ऐनी.अस-सालाता,

## कुंबा

इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) से मन्कूल मोअतबर अहादीस में कहा गया है कि औरतों को महबूब रखना अम्बिया (अ.स.) के आदाब में से था। आपने यह बात भी जोर देकर कही कि मोमिन लोग जबतक अपनी औरतों से मोहब्बत न करें उनके ईमान में कोई पेश -रफ्त नहीं हो सकती। आपने यह भी फ़रमाया कि जो लोग औरतों से ज़्यादा मोहब्बत करते हैं उनका ईमान भी ज़्यादा फुख़्ता होता है।

रसूले अकरम (स.अ.) ने फ़रमाया.

जो मर्द निकाह कर ले वह अपना आधा ईमान नहफूज़ कर लेता है। फिर अगर वह तक़वा इख़्तेयार करे तो उसकाबाकी बचा आधा ईमान भी महफूज़ हो जायेगा। हज़रत (स.अ.) ने मानेअ नहीं हो सकता है कि अल्लाह ताला उसको एक ऐसा फ़र्ज़न्द एनायत करे जो .

कल-मए-ला-इलाहा इल्लल्लाह, , के नूर के साथ दुनिया को चमका दे, और आपने जोर देकर फ़रमाया कि जो लोग आपकी सुन्नत पर यक़ीन रखते हैं उन्हें निकाह ज़रूर करना चाहिये।

इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) ने फरमाया.

एक शादी शुदा शख्स का दो रकअत पढना एक गैर शादी शुदा के सत्तर रकअत नमाज़ अदा करने से बेहतर है।

(1) जो शख्स शादी करे अपना आधा ईमान महफूज़ कर लेता है

(2) आपकी बीवी आपकी हम पल्ला (बराबर) होनी चाहिये और उसे आपके बच्चों की माँ बनने के काबिल होना चाहिये।

(3) किसी औरत से उसकी दौलत और हुस्न की खातिर निकाह न करों क्योंकि इस सुरत में आप दोनो चीज़ों से महरूम हो जायेंगे इसके बजाय आपको उसकी परहेज़गारी और सलाहियत को मददे नज़र रखते हुए उससे निकाह करना चाहिये।

(4) बेहतरीन औरत वह है जो बहुत से बच्चों कोजन्म दे,अपने शौहर से मोहब्बत करे पाकदामन हो अपने रिश्तेदारों में इज़्जत (आजिज़ी) इख्तेयार करे शौहर की खातिर बनाओ सिंघार करे और उससे खुश रहेऔर ना महरमों (गैर लोगों) से अपनी इस्मत महफूज़ रखे, शौहर की फ़रमांबर (आज़ा का पालन) करे और उसपर क़ब्ज़ा जमाने की कोशिश न करे।

(5) जब आप किसी औरत का रिश्ता तलब करना चाहें तो दो रकअत नमाज़ अदा करे अल्लाह की तारीफ़ करें और यह दुआ पढ़े।

अल्लाह हुम्मा इन्नी ओरीदो अन अता-ज़व्वजा फ़-क़द्रदिर- लीमिनब्रनिसाये अ-इफ़्फ़ा-हुन्ना फ़रजं व अहफ़ज़ाहुन्ना ली फ़ी नफ़सेहा व माली व औ-सआ हुन्ना

रिज़कव व अअ.-ज़मा हुन्ना बरकतंव व कद्रदिर ली वलदन तययेबन तज-अला-हूँ  
खलकन सालेहन फ़ी हयाती व बाद मौती, ,

या -अल्लाह , मैं निकाह करना चाहता हूँ। पस मुझे एक ऐसी औरत अता  
फ़अमा जो बे-हद नेक हो, वहमेरी खातिर खुद अपनी और मेरे माल की हिफ़ाज़त  
करे औरमेरे रिज़क में वसअत का मूजिब हो- फिर उसे इस कबिल बना कि वह  
एक बेटे को जन्म दे जो मेरी ज़िन्दगी में भी और मेरे मरने के बाद भी मेरी  
बेहतरीन यादगार हो, ,

(6) मर्वी है कि जब क़मर -दर अकरब का पहरा हो तो निकाह करना  
मुनासीब नहीं,और यह कि निकाह के लिये सबसे बेहतर जुमे का दिन है।

(7) निकाह के मौके पर वलीमा की दावत करना मुस्तहब है।

(8) निकाह से पहले खुत्बा पढ़ना मुस्तहब है चुनाँचे इमाम मो तक़ी (अ.स.)  
से यह

खुत्बा -ए-निकाह नक़ल किया गया है. .

अल्हम्दो लिल्लाहे इकरारन बे-नेअमतेही वला इलाहा इल्लल्लाहो इख़लासलन ले  
-वहदानिय्यतेही व सल्लल्लाहो अला सय्यदे बरिय्यतेही वल असफ़ेयाए मिन इत -  
रतेही-

अम्मा बाद. . फ़कद काना मिन फ़ज़लिल्लाहे अ-लल अनामे अन अगनाहुम  
बिल हलाले अनिल हरामे फ़क़ाला सब्हानहु. वअनकेहुल अयामा मिन्कुम

वस्सालेहीना मिनइबादेकुम व एमाएकुम इययकून् फुका रा-आ युगने-हेमुल्लाहो मिन फ़जलेहि वल्लाहो वासेउन अलीम (सूर-ए-नूर आयत 32)

मैं अल्लाह की नेमतों का इज़हार करते हुए उसकी तारीफ़ करता हूँ उसकी वहदानियत के साथ इस बात की भी गवाही देता हूँ कि उसके अलावा कोई खुदा नहीं है औरबनी नौ-ए-इन्सान के सरदार (मों. मुस्तफ़ा (स.अ.) और उनकी बर-गुजीदा इतरत पर दुरूद व सलाम भेजता हूँ.

(इसके बाद कहता हूँ) यह अल्लाह का अपने बन्दों पर फ़ज़ल है कि उसने इनकी रहनुमाई हलाल और हराम इम्तियाज़ की तरफ़ की है जैसा कि हर एक से पाक खुदा फ़रमाता है।

और तुम मे से जो मर्द और औरतें कुवारे हो उनके निकाह करा करो अपने नेकूकार गुलामो और लॉडियों (नौकरानियों) के भी (निकाह कर दिया करो)। अगर वे फ़क्र व फ़ाका की हालत मे होंगे तो अल्लाह वुसअत वाला और इल्म वाला है।

मुस्तहब है कि शबे जुफ़फ़ाफ़ (हमबिस्तरी की रात मे जौजा और शौहर वुजू करें और दो रकअत नमाज़ अदा करें।

फिर शौहर अल्लाह की हम्द व सना (तारीफ़) करने और रसूले अकरम (स.अ.) और आपकी आल पर दुरूद व सलाम भेजने के बाद यह दुआ पढ़े।

अल्लाह हुम्मर जुक्रनी उलफ़ता-हा व वुद्रदह वरेज़ाहा व अर -ज़ेनी बेहा वजमअ बै-नना बे अहसनिज तेमाइंव व उनसिंव व अयसरेअ तेला फ़िन फ़-इन्ना तो - हिब्बुल हलाला व तक-रहुल हराम ,

या अल्लाह मुझे इस औरत कीमोहब्बत, उल्फ़त उल्फ़त औरखुशी अता फ़रमा। मुझे मुतमईन कर दे और हमें हम -ख़्याली, यगानेगत और कशिसके ज़रिये एक दुसरे के साथ अच्छी तरह से वाबस्ता कर दे, क्योंकि तू हलाल को पसन्द आर हराम कोना -पसन्द फ़रमाता है।

मुनदर्जा ज़ैल (निम्नलिखित) मौकों और हालात में मुजामेंअत (हम- बिस्तरी) मकरूह है।

1. जब इन्सान कपड़े उतारकर बर्हना (नंगा) हो गया हो।
2. जब इन्सान खड़ा हो।
3. जब कोई तीसरा शख्स शौहर और बीवी की आवाज़ सुन रहा हो।
4. जब उस जगह कोई बच्चा मैजूद हो।
5. वुजू किये बगैर (जब औरत हाम्ला हो)।
6. अज़ान और अक्रामत के दरमियान वक्फ़े में।
7. गुरुबे आफ़ताब के वक़््त।
8. रात के इब्तेदाई हिस्से में (शुरू रात में)
9. (15) शाबान की रात।

10. ईदुल -फ़ित्र और ईदुल-कुर्बान ककी रात।
11. माह शाबान की आखिरी दिन में।
12. चाँद गहन और सूरज गहन के वक़्त।
13. जिस दिन तेज़ हवाए चले या ज़लज़ला आये।
14. खुले आसमान के नीचे।
15. सूरज के सामने
16. फलदार दरख़्त (पेड़) के नीचे।
17. किसी इमारत की छत पर।
18. जब इन्सान कशती में हो।
19. जब पानी दस्तेयाब न हो।
20. औरत के अय्यामे हैज़ मे उससे मुजामेअत हराम है।

(1) सोमवार की रात, मंगल की रात, जुमेरात की रात, जुमेरात के दिन और जुमे की रात मुजामेअत (सेक्स) करना मुस्तहब है।

इस्लाम ने शौहर और बीवी के कुछ फ़रायज़ मुताअय्यन (निश्चित) किये है, जिनकी सही-सही अदायगी न फ़क़त यह कि उनके इख़्तेलाफ़ात (मतभेदों) को दूर करती है बल्कि उनके दरमियान एक ऐसी उल्फ़त और मोहब्बत पैदा कर देती है जिससे उनकी ज़िन्दगी खुशगवार हो जाती है।

## बीवी के फ़रायज़ (पत्नि के कर्तव्य)

बीवी के लिये लाज़िम है कि...

1. अपने शौहर की इताअत करे।
2. शौहर की इजाज़त के बग़ैर न तो उसका माल खर्च करे और न किसी को ब-तौर तोहफ़ा दे।
3. शौहर की इजाज़त के बग़ैर अपने माल में से भी किसी को कुछ न दे।
4. शौहर की इजाज़त के बग़ैर इस्तहबाबी रोज़ा न रखे।
5. अगर शौहर उससे खफ़ा हो तो (चाहे ज़्यादती शौहर की ही हो) रात को न सोये बल्कि उसे और खुश करने की कोशिश करे।
6. अपने शौहर की खातिर बनाओ सिंघार करे।

## शौहर के फ़रायज़

शौहर के लिये लाज़िम है कि..

1. बीवी को रोटी रपड़ा मोहय्या करे
2. बीवी को ऐसा सामान खाने पीने का मोहय्या करे जो लोग आम तौर से इस्तेमाल करते हों।
3. ईदों (त्योहारों) के मौक़ो पर उसे मामूल मोहय्या करे।
4. बीवी के साथ अच्छा सुलूक करें।

5. अगर बीवी से कोई गलती हो जाये तो माफ़करदे।
6. बीवी के साथ सख़्ती से पेश न आये।
7. अपने कारोबार का इन्तेज़ाम उसके सुपुर्द न करे।
8. बीवी को एक ऐसा काम करने ब्राज़ रखे जिसका अन्जाम बुरा होने का इम्कान हो।
9. हरचार रातों मे से कम से कम एक रात उसके साथ सोये और हर चार महीनों में कम से कम एक मर्तबा उससे मुजामेअत करे।

## औलाद

1. अगर कोई शख्स ला-वलद मर जाये तो वह एसा ही है जैसे कि पैदा ही न हुआ हो और अगर अपने पीछे औलाद छोड़कर मरे तो एसा है जैसे वह मरा ही न हो।
2. रवायत है कि बेटियाँ तो नेकियाँ है और बेटे नेमतें हैं। अल्लाह नेकियो का अज़्र देता है और नेमतो के बारे में ब्राज़ पुर्स करता है।

## बेटी और बहन की बरकत

रसूले अकरम (स.) ने फ़रमाया, अगर किसी शख्स की तीन बेटियाँ या तीन बहनें हों वह उनकी जिम्मेदारी सँभाले और उनकी परवरिश की खातिर ज़हमत उठाये तो अल्लाह ताला अपने फ़ज़ल व करम से उसे जन्नत में दाखिल करेगा ..

इस पर एक शखस ने सवाल किया ,या रसूलल्लाह (स.) अगर उसकी दो बेटियाँ यादो बहने हो।

रसूले अकरम (स.अ.) ने फ़रमाया ..

तब भी वह जन्नत मे दाखि होगा।

## तलबे औलाद

रवायत है कि तलबे औलाद के लिये इन्सान को चाहिये कि फ़ज़और इशा की नमाज़ के बाद सत्तर मर्तबा अस्तग़फ़ेरुल्लाह को और उसकेबाद यह आयत पढे ..

अस्तग़फ़ेरू रब-बा- कुम इन्नहु कानाग़फ़ारंम युर-सेलिससमाआ अलैयकुम मिदरारंव व युमदिदकुम बे-अमवीलिव व बनीना व यजअल लकुम मिदरारंव व यज अल लकुम अन्हार।

अपने परवरदिगार से मग़फ़ेरत चाहते हैं बेशक वह बड़ा बख़्श ने वाला है वह तुम पर आसमान (की तरफ़) से ख़ूब मेंह (मूसलाधार बारिश) बरसायेगा बरसायेगा और तुम्हें माल व औलाद में तरक्की देगा।

वह तुम्हारे लिये बागात पैदा करेगा और नहरें जारी करेगा।

एक और रवायत में है कि औलाद तलब करने के लिये बिस्तर में लेटे-लेटे मुन दर्जा ज़ैल आयत पढनी चाहिये।

व जन्नूने इज-ज़-हबा मुगाज़ेबन फ़-जन्ना अल-लन नक़देरा अलैय-हे फ़नादा फ़िज़-ज़लोमाते अल-ला-इलाहा इल्ला अन्ता सुब्हानका इन्नी कुन्तो मिनज़ ज़लेमीन

फ़स-त-जबना लहू व नजजैनाहोमिनल गम्मे वकजालेका नूनजिल मोमेनीना व अन्ता खैरूल वीरेसिन।

और जब जन्नून (यूनुस (अ.स.)) गुस्से में आकर चले गये उन्होने गुमान किया कि हम उनकी रोज़ी तंग न कर दें फिर उन्होने तारीकिये में से पुकारा कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं और तू पाक है बेशक मैं (ही) कुसूरवार हूँ पस हमने उनकी दुआ कुबूल की और उन्हें गमसे निजात दी। हम मोमिनो को इसी तरह निजात दी। हम मोमिन को इसी तरह निजात दी। हम मोमिन को इसी तरह निजात दिया करते हैं। जब ज़करिया (अ.स.) नेअपनो रब को पुकारा कि ऐ परवरदिगार मुझे तनहा (बे-औलाद) न छोड़ना और तु ही सब वारिसों से बेहतर (वारिस) है।

(सूर-ए-अम्बिया आयत 87से 89 तक)

कुछ और हदीसो में आया है कि अगर किसी शख्सकी बीवी हामिला हो औरवह नियत करे कि वह अपने बेटे का नाम मोहम्मद या अली रखेगा तो अल्ला उसे बेटे से नवाज़ेगा।

हामिला औरत को चाहिये कि वह बेही और .कीकर .का गोंद खाये और बच्चे की पैदाइश के बाद ताज़ी खजूरें खाये।

## बच्चे की पैदाइश

मुनासिब है कि बच्चे की पैदाइश के बाद इमाम हुसैन (अ.स.) के रौजे की खाके शिफ़ा को दरिया-ए-फुरात के पानी में मिलाकर उसके तालू पर लगाई जाये। अगर दरिया-ए-फुरात का पानी दस्तियाब न हो तो बारिश का पानी इस्तेमाल किया जाये। बच्चे के दायें कान में अज़ान और बायें कान में अक़ामत कही जाये।

2. रवायत है कि जब किसी औरत के लिये बच्चे को जन् देना मुश्किल हो जाये तो उसके लिये यह आयात पढ़ना चाहिये ,

फ़ अजा-अ-हल मखाज़ो एला जिज़ इन नख-लतेक़ालत या लयतनी मितो क़ब्ला हाज़ा व जाला रब्बोके तहतके सरिय्यन व हुज़्जी एलायके बे जिज़-इन-नख-लते तो-साक़ित अलैयके रूतबन जनि्य्यन,,

पस दर्द ज़ेह उन्हें खजूर के दरख़्त तले ले आया तो उन्होंने कहा ऐ काश कि मैं इससे क़बल ही मर गई होती और भूली बिसरी हो जाती तब किसी ने उन्हें ज़मीन के नीचे से पुकारा कि रंजीदा ख़ातिर न हो तेरे परवरदिगार ने

तेरे पाँव के नीचे एक चश्मे को जारी कर दिया है और तुम खजूर के तने को पकड़कर अपनी तरफ हिलाओ तुम पर पके हुए खुर्मे गिरंगे।

(सुर.-ए-मर्यम-आयात 23से 25 तक)

3. बेहतर नाम वह है जिससे अल्लाह के सामने इन्सान की उबूदियत का इजहार होता है। होता है (मसलन अब्दुल्लाह) इसके बाद अम्बिया (अ.स.) के नाम हैं।

4. मुनासिब है कि बच्चे की पैदाइश से पहले ही उसका एक अच्छा सा नाम रख दिया जाये।

5. रसूले अकरम (स.) ने फ़रमाया है जिस शख्स के चार फ़र्जन्द हों और वह उनमें से एक को भी मेरा हम नाम न बनाये तो उसे मेरे साथ मोहब्बत नहीं है।

6. पैदाइश के वक़्त बच्चे को नहलाने की ताकीदी हिदायत की गई है।

## हजामत ,खाना और अक्रीका

1. जो शख्स हैसियत वाला हो उसे बच्चे का अक्रीका (जानवर की क़र्बानी) करने की पुरज़ोर ताकीद की गई है और बेहतर यह है कि अक्रीका बच्चे की पैदाइश के सातवें दिन किया जाये अगर इसमें ताख़ीर हो जाये तो बच्चे के बाप को चाहिये कि बच्चे के सिव-बुलूगियत को पहुँचने तक उसका अक्रीका कर दे नहीं तो उस बच्चे के बालिग़ होजाने के बाद खुद उसके लिये मुस्तहब है कि वह जीते जी अपना अक्रीका करे।

2. बच्चे की पैदाइश के सातवें दिन उसका अक्रीका करने से पहले उसका सिर मुनडवाना मुस्तहब है। फिर उसके सिरके बालों के बराबर चाँदी या सोना बतौरे

सदका देना चाहिये फ़र्जन्दे नरीना (लड़के का) ख़त्ना कराना पैदाइश के सातवें दिन ही अंजाम दिया जाये।

3. रवायत के मुताबिक़ बच्चे का ख़त्ना कराते वक़्त यह दुआ पड़नी चाहिये ..

अल्लाह हुम्मा हाज़ेही सुन्नतोका व सन्नतो नबिय्येका सलावातोका अलैयहेव आलेही वतेबाउम मिन्ना-लका वले नबिय्येका बे मशिय्यतेका व अमरिन अन-कज़ा-का ले-अमरिन अ-रत्तहू व कज़ा-इन हत्तम-तहू व अमरिन अन्ता अअ-फ़ज़-तहू व अ-ज़फ़-तहू हर्ल-हदीदेफ़ी खेतानेहि व हजा- मतेहि बेअमरिन अन्ता अअ.-रफ़ो बेही मिन्नी

अललाह -हुम्मा फ़-तहहिरहो मिनज़ जुनूबे व जिदफ़ी उमरेही वद-फ़-इलआल्लाह-हुम्मा फ़अ. अनहुल फ़करा फ़-इन्नाका तअ.-लमो वला नअ.-लमो,,।

या अल्लाह यह तेरा मुकर्रर किया हुआ तरीका और तेरे नबी की सुन्नत है कि तू उन पर और उनकी पाक आलपर दुरूद भेजता है (खत्ने के) इस अमलमें हम तेरी मशिय्यत, इरादे और फ़ैसले के मुताबिक़ तेरी इताअत और तेरे नबी की इताअत करते हैं,जैसा कि तूने इरादा किया मोहकम फ़ैसला किया और इसका सवाब क्या है तेरा वह हुकम जिसके तहत तूने इस (बच्चे) को इसका सिर मुनडवाने और खत्ना करवाने मे लोहे (के औज़ार) की काट का मज़ा चखाया है।इसकाम की मसलहत को तू मुझसे ज़्यादा जानत है।

या अल्ला तू इस बच्चे को गुनाहों से पाक कर दे.इसको लम्बी उम्र अता फ़रमा दे, इसके बदन को आज़ार (तकलीफ़ों से बचाये रख, इसे कशायश अता करना और मुफ़लसी से बचाये रकना और जो कुछ तू जानता है, हम नहींजानते,,।

## शीर-खार्गी (दूध पिलायी)

1. शीर-खार्गी की ज़्यादा से ज़्यादा मुददत दो साल है और किसी माकूल (सही) उज़्र के बच्चे को इससे ज़्यादा अर्से तक दुध पिलाना जायज़ नहीं। इसके अलावा जब तक ज़रूरी न हो दुध पिलाने की मुददत 21 माह से कम नहीं चाहिये।

2. बच्चे केलिये सबसे मुफ़ीद (फ़ायदेमन्द) और मुआफ़िक़ दुध माँ का है और वह दोनों तरफ से पिलाना चाहिये।

3. अगर बच्चे को दूध पिलाने के लिये आया (दुध पिलाने वाली) रखी जाये तो उसे कुबूलसूरत और नेक सीरत होना चाहिये क्योकि बच्चे पर दुध का असर पड़ता है।

## तालीम व तरबियत (शिक्षा-दीक्षा)

1 बच्चे की परवरिश (पालन-पोषण) के बारे में कहा गया है कि सात साल की उम्र तक उन्हें खेलने देना चाहिये। अगलू सात साल उन्हें लिखना पढ़ना सीखना चाहिये। और फिर सात साल तक उन्हें हलाल व हराम के बारे में तालीम देना चाहिये।

2 जब लड़के छ. (6) साल की उम्र को पहुँच जायें तो उन्हें एक रज़ाई ओढ़ कर इकट्ठा नहीं सोना चाहिये। नीज़ जब लड़के और लड़कियाँ दस साल की उम्र को पहुँच जायें तो उनके बिस्तर अलग जगह पर कर देना चाहिये। चर्चों को नौ-उम्मी

(बचपन) में ही हदीसे याद करा देनी चाहिये और उनकी तरबियत इस अंदाज़ से करनी चाहिये कि उनके दिलों में अमीरूल-मोमिनीन (अ.स.) की मोहब्बत और अक्रीदत पैदा हो जाये। इसके अलावा उन्हें कुर्आने मजीद ठीक पढ़ना चाहिये और तालीम दिलाकर किसी अच्छे रोज़गार पर लगा देना चाहिये।

3 अपने बच्चे की नौ-उम्र (बचपन) में गुस्ताखी और मुतहम्मूल मिजाजी (स्वभाविक सहनशीलता) की दलील है।

4 अपने बच्चों को तैराकी और तीर अन्दाज़ी, निशाने बाज़ी ज़रूर सिखायें।

5 बच्चों से मोहब्बत करें उनके साथ बे-वक्रअती (बे-हैसियती) और सख्ती से पेश न आये।

6 ऐसा मुश्किल काम उनके ज़िम्मे न पेश न आये।

7 अगर आप उनके साथ कोई वायदा करे तो ज़रूर पूरा करें।

8 उन्हें बोसा दें (चूमें) क्यों जो शख्स अपने बच्चे को चूमे अल्लाह ताला उसके नाम-ए-आमाल में एक नेकी लिख देता है।

9 अपने बच्चे को खुश करें ताकि अल्लाह ताला क़यामत के दिन आपको खुश करें।

10 बच्चों के साथ बच्चे की तरह खेले।

11 इल्म और नेकी के अलावा किसी और बिना पर उनके बीच इमतियाज़ (फ़र्क) न बर्ते।

12 रात को सोने से पहले उनका हाथ मुँह धलायें।

13 जब कभी आप अपने घर के तरजीह (प्रधानता) दें।

14 अपने बच्चे को खुश व खुरम रखें।

15 इस बातका खयाल रखें कि जब लड़की छ.साल की हो जाये तो कोई नामहरम (अपरिचित, खूनी रिश्तेदार छोड़कर सभी लोग) न तो उसका बोसा लें और न उसे अपनी गोद में बैठायें।

16 जिस लड़के की उम्र सात से ज़्यादा हो उसके लिये आरतो का बोसा लेना दुरुस्त नहीं।

17 इमाम मूसा काज़िम (अ.स.) से रवायत है कि आपने फ़रमाया .एक शख्स के घर के अफ़राद उसके गुलाम हैं लिहाज़ा जब अल्लाह ताला किसी शख्स को अपनी रहमत से नवाज़े तो उसे चाहिये कि उसको अपने गुलामो तक फैला दे वरन:जल्द ही वह रहमत मादूम (खत्म) हो जाती है।

## वालदैन (माता –पिता)

वालदैन (माता-पिता) की इज़ज़त करना दीन की अहम तरीन हिदायत में से है. उनकी नाफ़रमानी (बात न मानना) करना गुनाहे कबीरा (बड़ा गुनाह) है।

1.एक बेटे को अपने वालेदैन के हुक्म को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिये सिवाये इसके जब व उसे दीन इस्लाम को तर्क करनेपर मजबूर करें।वालदैन के साथ अच्छा बर्ताव करना चाहिये।

2. इन्सान को चाहिये कि अपने बाप को नाम लेकर न पुकारे रास्ता चलते हुए उनसे पे-कदमी न करे,जिसके नतीजे (स.अ.) ने फ़रमाया है कि चार लोगों के चेहरे पर निगाह डालना अल्लाह के ज़िक्र के बराबर है:

(1) इमाम आदिल (2) आलिमे हक (3) वालिद (4) वालिदा हजरत (स.अ.) न यह भी फ़रमाया है कि तीन गुनाह ऐसे हैं जिनकी सज़ा इन्सान इसी दुनिया में जल्द ही पा लेता है।

(1) वालदैन की नाफ़रमानी (2) अल्लाह की मखलूत (नौ-ए-इन्सान) पर जुल्म करना (3) अल्लाह और उसकी मखलूक का ना-शक्रगुजार होना।

3. अपनी माँ के साथ बहुत ही अच्छा बर्ताव करे।

4. अपने वालदैन को सख्त नज़रों से न देखे बल्कि उन पर मोहब्बत और हमदर्दी की निगाह डाले।

5. जब वालदैन फौत (मर जाये) हो जाये तो उनका अपने फरज़न्दो पर हक कि व उनके कर्जे अदा करें और कुनूत में उनके लिये दुआ-ए-मग़फ़ेरत (क्षमा हेतु प्रार्थना) करे और नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़े।

रब-बनग़ फ़िली वले वाले दय्या व लिल मोमेनीनीना यौमा यकूमुल हिसाब,,

ऐ परवरदिगार हिसाब के दिन मुझे मेरे वालदैन और मौमेनीन को बख़श देना।

(सूर:-ए-इब्राहीम (अ.स.) आयात न.41)

## सफ़ाई और तहारत

इस्लाम ने सफ़ाई को इतनी अहमियत दी है कि उसे ईमान का एक हिस्सा करार दे दिया है। जैसा कि कुर्आने मजीद सफ़ाई और तहारत की ताकीद करते हुए फ़रमाता है

मा युरीदुल्लाहो ले यजअला अलैयकुम मिन हरा-जिंव वला किंय योरीदो ले-यो-तह-हेरा कुम वले योतिम्मा नेअ-मता-हू अलैयकम अल-लकुम तशकुरून,

(सूर:-ए-मायदा आयात न.6)

अल्लाह नहीं चाहता कि तुम्हारे लिये कोई तंगी (मुशकिल) पैदा करे मगर यह कि तुम्हें पाक कर दे और अपनी नेमततुम पर तमाम कर दे ताकि तुम शक्रगुजार बनो।

इन्नल्लाह यो हिब्बुत-तव्वाबीना व यो हिब्बुल मुतह-हेरीना.

(सूर:-ए-बकरा आयात न. 222)

बेशक अल्लाह तौबा कने वालों को पंसन्द करता है।

इस्लाम ने बर्तनों, कपड़ो, बदन, बालो, दातों, पीने के पानी, वुजू और गुस्ल करने के पानी रिहाईश गाहों, गली-कूचों अवामी जगहों खाने पीने की चीजो और इन्सान पर जोर दिया है। रसूले अकरम (स.अ.) और आइम्मा-ए-ताहेरीन (अ.स.) की कई एक अहादीस में हर उस नफ़रत-अंगेज़ चीज़ को जो बीमारी पैदा करती है,

उस (मसलन जरासीम) को शैतान से मनसूब किया गया है और ऐसी तमाम चीजों को गुर्बत और मुसीबत का मूजिब गर्दाना गया है।

## दाँत साफ़ करना

1. रवायत की गई है कि रसूले अकरम (स.अ.) ने फ़रमाया जिब्रईल ने मिसवाक करने पर इतना ज़ोर दिया कि मैं समझा कियह अमल मेरी उम्मत पर वाजिब कर दिया जायेगा।

2. मिसवाक (दूथब्रश) से दाँत नीचे से ऊपर को साफ़ किये जायें और उसके बाद पानी के साथकुल्ली कर लेना चाहिये।\*

3. नमाज़ अदा करनेसे पहले मिसवाक करने के 12 फ़ायदे हैं।

(1) यह पैग़म्बरों का अमल है।

(2) यह अल्लाह की खुशनुदी का मूजिब है

(3) यह मुँह को साफ़ करता है।

(4) यह आँखों की रौशनी को तेज़ करता है।

(5) यह बलगम निकालता है।

(6) यह हाफ़िज़े (याद-दाश्त) को बढ़ाता है।

(7) इससे दाँत साफ़ होते हैं।

(8) इस नेक आमाल का सवाब कई गुना बढ़ जाता है।

(9) यह दाँतों की कम ज़ोरी दूर करता है और उन्हें गिरने से रोकता है।

(10) यह दाँतों की जड़ों को मजबूत करता है।

(11) फ़रिश्ते उन लोगों से खुश होते हैं जो मिसवाक करते हैं।

(12) यह भूख के सेहत मन्दाना अंदाज़ में बढ़ाता है।

4. इमाम मूसा काज़िम (अ.स.) और इमाम अली रज़ा (अ.स.) के इरशाद के मुताबिक हज़रत इब्राहीम (अ.स.) की आदतों में से पाँच ऐसी हैं। जिनका ताल्लुक धड़ से है।

जिन पाँच चीज़ों का ताल्लुक सर से है, वे यह हैं।

(1) मिसवाक करना।

(2) मुँहों को काटकर दुरुस्त करना।

(3) वुजू में सर का मसा करनेके लिये बालोंमें मांग निकालना।

(4) पानी के साथ कुल्ली करना।

(5) पानी के साथ नाक साफ़ करना।

जिन पाँच चीज़ों का ताल्लुक धड़ से है वे यह हैं:

(1) खत्रे कराना

(2) नाफ़ के नीचे के ग़ैर ज़रूरी बाल साफ़ करना।

(3) बग़लों के बाल साफ़करना।

(4) नाखुन काटना।

(5) पेशाब के बाद शर्मगाह को पानी से धोना

5. रसूले अकरम (स.अ.) के फ़रमान के मुताबिक़ तीन चीज़ें ऐसी हैं जो इनसान के हाफ़िज़े कोतेज़ करती और तमाम दर्दों से शिफ़ा बख़्शती हैं।

(1) गौंद का चबाना।

(2) मिसवाक करना

(3) कुरआने मजीद की तिलावत करना

एक और हदीस में रसूले अकरम (स.अ.) ने फ़रमाया है कि मिसवाक करने के बाद नमाज़ की दो रकअते अदा करना सत्तर रकअतों से बेहतर है जो मिसवाक किये बग़ैर अदा की जाये।

## बाल तर्शवाना

1 .जब सर के बाल लम्बे हो जाये तो उन्हें तर्शवा दें।

जब आप बाल तर्शवाना चाहें तो क़िब्ला -रू (क़िबले के सामने होकर) बैठें और शुरू में यह दुआ पढें:

अल्लाह हुम्मा अअ-तेनी बे-कुल्ले शअ-रतिन नू-रंय यौमल केयामते ,,।

मैं यह अमल अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ। इसे अंजाम देने में उसकी मदद चाहता हूँ और मैं यह अमल रसूलल्लाह के दीनी अहकाम के मुताबिक़ कर रहा हूँ। ऐ परवरदिगार मेरे बाल के एवज़ क़यामत के दिन मुझे एक रौशनी अता फ़रमा।

जब आप बाल तरशवा चुकें तो कहे:

अल्लाह हुम्मा जय्यिन्नी बित-तवा व जन्निब निर -रेदा,,

ऐ परवरदिगार मेरी आराइश तकवा से कर और मुझे गुमराही से बचा।

2. बनाओ सिघार की खातिर औरतों का अपने माथे और चेहरे के बाल उखाड़ने में कोई हर्ज नहीं।

3. मर्दों के लिये मुस्तहब है कि मुनदर्जा ज़ैल (निम्नलिखित) तरीकों में से कोई एक इख्तेयार करें।

(बेहतर है कि) वे अपने सर के बाल तर्शवायें या उन्हें बढ़ने दें कि चंदिया नज़र आने लगे।

## मुँछे तराशना

इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) ने फ़रमाया कि जो शख्स जुमे के दिन मुँछें तराशेया नाखुन काटे उसके लिये ज़रूरी है कि यह दुआ पड़े:

बिहिमल्लाहे व बिल्लाहे व अला सुन्नते मोहम्मदिव व आले मोहम्मद व आलेमोहम्मद की सुन्नत के मुताबिक़ अमल करता हूँ।

अल्लाह के नाम से, मैं उसी पर भरोसा करता हूँ और मोहम्मद व आले मोहम्मद के मुताबिक़ अमल करता हूँ।

इमाम जाफ़रे सादिक (अ) की एक और हदीस के मुताबिक़ मुँचों का तराशना ग़मगीनी और औहाम परस्ती (वहम का बहु औहाम) को कम करता है और यह रसूले अकरम (स.अ.) की सुन्नत भी है।

मूँछो का काटना सुन्नते मौअक्केदा (ऐसी सुन्नत जिसकी ताकीद की गई है और जितना आप उन्हे उनकी जड़ों से काटें उतना ही बेहतर है।

इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) अपनी मूँछो को बालो की जड़ों तक काटा करते थे आप यह भी फ़रमाते थे कि नाखूनों का जुमे के दिन काटना इन्सान को उस जुमे से अगले जुमे तक बफ़ा (सर के बालों की सकरी) के आर्जे से महफूज़ रखता है।

## दाढी रखना

इन्सान की दाढी दरमियाना सी होनी चाहिये यानि न बहुत लम्बी और न बहुत छोटी हो। दाडी का मुठ्ठी भर से लम्बी होना मकरूह है और उसके ना जायज़ होने का भी इम्कान है।

उलमा मे यह कौल मशहूर है कि दाढी का मुंडवाना जायज़ नहीं है।

## नाखून काटना

1. हर जुमे को नाखून काटना, मुँछे तराशना और नाक के अन्दर से बाल खींचना मुसतहसन (अच्छा) है।

2. नाखून काटना सुन्नते मौअक्कदा है।

3. औरतों के लिये जायज़ है कि नाखून छोड़ दें, लेकिन मर्दों को चाहिये है कि बढे हुए नाखून पूरे काटें।

4. नाखून काटने के लिये बेहतरीन दिन जुमे का है।

5. जो बाल नाखून और खून बदन से अलग हो जाये उसे ज़मीन में दफ़न कर देना चाहिये।

## कंघा करना

सर और दाढ़ी के बालों में कंघा करने के कई फ़ायदे हैं एक मोअतबर रवायत के मुताबिक़ इमामं जाफ़रे सादिक (अ.स.) ने फ़रमाया कि अच्छे कपड़ों का इस्तेमाल दुश्मन को पस्त करता है, बदन पर तेल लगाना ज़ेहनी ख़िचाव और परेशानियों को कम करता है बालों में कंघा करना दाँतों को मज़बूत करता है। रोज़ी में इज़ाफ़े का बायस बनता और कुव्वते बाह (बाजुओं की ताक़त को बढ़ाता है।

## इत्र, खुशबू और तेल का इस्तेमाल

इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) ने फ़रमाया है कि इत्र का इस्तेमाल दिल को मज़बूत करता है और कुव्वते बाह को बढ़ाता है।

अमीरूल मोमिनीन इमाम अली (अ.स.) ने फ़रमाया है कि एक औरत के लिये लाज़िम है कि वह हमेशा अपने शौहर की खातिर खुशबू लगाये।

इमाम अली (अ.स.) का फ़रमान है कि तेल का इस्तेमाल बदन को ज़्यादा जाज़िब बनाता है कि कुव्वत और ताज़गी बख़शता है। बदन के मसानो को खोलता

है जिल्द (खाल) की खुशकी और सख्ती को दूर करता है और चेहरे पर अजीब सी चमक लाता है।

इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) फ़रमाते हैं कि खुशबुओं में मुश्क अंबर, जाफ़रान और ऊद शामिल है।

1. इत्र और खशबू का इस्तेमाल अम्बिया-ए-केराम के पंसदीदा मामूलात में से हैं।
2. जुमे केदिन खशबू के इस्तेमाल की बड़ी ताकीद की गई है।
3. यह ज़रूरी है कि मर्द तेज़ इत्र इस्तेमाल करे और औरत हल्का इत्र लगाये।
4. एक मुसलमाल औरत को अपने शौहर की खातिर हर रोज़ इत्र इस्तेमाल करे लेकिन इत्र लगा कर घर से बाहर न निकले।
5. जब आरके लिये खुशबू लाई जाये तो उसे कुबूल कर लें और उसके लेने से इन्कार न करें।

## बदन पर तेल लगाना

हर महीने में एक बार बदन पर तेल की मालिश मर्दों के लिये मुफ़ीद है जहाँ तक औरतों का ताल्लुक है अगर वहहर रोज़ भी तेल मलें तो उसमें कोई क़बाहत नहीं।

मालिश के लिये ब-नफ़शा और सोसन के तेल सबसे बेहतर हैं।

## गुस्ल

गुस्ल करना मुस्तहब है, हर रोज हमाम जाना मुनासिब नहीं लेकिन एक दिन छोड़कर अगले दिन हमाम में जाना ठीक है।

1. बदन का निचला हिस्सा ढाँके बगैर खुले आसमान तले गुस्ल करना और बर्हन्गी की हालत में नदी (या नहर) में दाखिल होना मना है।

2. शिकम सेरी की हालत में हमाम में दाखिल न हों।

3. जब भूख लगी हो तो गुस्ल खाने में जाये बलिकि उससे पहले कुछ खा पी लें।

4. हमाम में ठण्डा पानी न पियें और तर्बूज भी न खायें।

5. हमाम से बाहर आन के बाद अपने पाँवों को ठण्डे पानी से धोयें।

6. गुस्ल खाने में दाखिल होने से पहले यह दुआ पढ़ें।

अल्लाह हुम्मा अज़ ह़िब अन्निर रिजसा वन-नजा-सा व तहहिर जसा-दी व क़लबी।,,

ऐ परवरदिगार मुझसे निजासत को दुर कर देऔर मेरे बदन और दिल को पाक करदे।

7. जब आप हमाम में हों तो पीठ या पहलू के बल न करे।

फ़िक़ा- हुर्रेज़ा में लिखा है कि ग़स्ले जुमा के बाद मुन-दर्जा ज़ैल (निम्नलिखित) दुआ पढ़नी चाहिये।

अल्लाह हुम्मा तहहिरनी व तहहिर कल्बी व उनके गुस्ली व अजरे अला लिसानी जिक-रका व जिकरा नबियेका मोहम्मदिन सल्ललाहो अलैयहे व आलेही वज अलनी मिनत-तववाबीना वल मुतह-हरन,,

या अल्लाह मुझे और मेरे दिल के पाक कर दे, मेरे गुस्ल को बा बरकत बना दे – मेरी ज़बान को अपनी और अपने रसूल मोहम्मद मुस्तफ़ा (स.अ.) और उनके अहैले बैत (अ.स.) की तारीफ़ में मशगूल कर दे और मुझे उन पाक दिल लोगों में शामिल कर दे जिनकी तौबा क़बूल हो चुकी हो।

8. इन्सान को अपना सर और कपड़े धोने की ताकीद की गई है।

9. अपने बदन से उसबदबू को दूर कीजिये जिससे लोगों को तकलीफ़ पहुँचती है। अल्ला ताला उन लोगों से नफ़रत करता है जो गन्दे हों और जिनकी फैलाई हुई बदबू से लोगों को तकलीफ़ पहुँचे।

10. बग़ल और नाफ़ के नीचे उगने वाले बालों को ना तराशना एक ना पसंदीदा फ़ैल है।

11. मुस्तहब है कि गुस्ले जनाबत करते वक़्त यह दुआ पढ़ी जाये।

अल्लाह हुम्मा तहहिर कल्बी वज़क्की अमली व तक़ब्बल सअ-यी वजअल मा इन – दका ख़ैरल-ली-अल्लाह हुम्मज अलनी मिनत-तव्वाबीना वज –अलनी मिनल मुतह-हरीन ,,

या अल्लाह मेरा दिल पाक कर दे , मेरा अमल खालिस बना दे, मेरी कोशिश कबूल फ़रमा मुझे वही एनायत कर जो मेरे लिये अच्छा हो मुझे उन लोगो में शामिल कर दे जो पाक दिल और सालेह हैं और जनकी तौबा कबूल की गई है।

12. मनासिब है कि गुस्ले जुमा उस दिन की सुबह से दोपहर तक तर्क न किया जाये और यह दोपहर के जिस क़द्र करीब हो बेहतर है।

गुस्ले जुमा दोपहर के बाद शाम तक क़ज़ा गुस्ल की नियत करके भी किया जा सकता है।

13. रवायत के मुताबिक़ मुस्तहब गुसल इस तरह है:

(1) रमज़ानुल मुबारक की ताक रातो-और खास कर की पहली पन्द्रहवीं सत्रहवीं , उन्नीसवीं, इक्कीसवीं और तेईसवीं रात को।

(2) ईदुल फ़ित्र की रात को ईदुलकुर्बान के दिन।

(3) आठवीं ज़िल – हिजा के दिन।

(4) अफ़े के दिन तक़रीबन ज़ोहर के वक़्त।

(5) माहे शाबान की दरमियानी रात को।

(6) माहे रजब की दरमियानी रात को।

(7) रसूले अकरम (स.अ.) की बेसत के दिन (27 रजब)

(8) ग़दीरे ख़ुम के दिन (18 ज़िल-हिज्जा)

(9) मुबाहेला के दिन (24 या 25 ज़िल-हिज्जा)

(10) नौ -रोज़ के दिन (21 मार्च)

इसी तरह मुनदर्जा ज़ैल पर गुस्ल करना भी मुस्तहब है।

(1) हज या उमराह के लिये अहराम बाँधते वक़्त।

(2) रसुले अकरम (स.अ.) और आइम्मा -ए- ताहेरीन (अ.स.) की ज़ियारत के मौक़े पर।

(3) इस्तेख़ारा करते वक़्त

(4) तौबा करते वक़्त

(5) सूरज गहन की क़ज़ा नमाज़ पढ़ने के वक़्त चाहे नमाज़जान बुझ कर तर्क की गई हो।

(6) हरमे मदीना, मदीना शहर और मस्जिद नबवी में दाखिले के वक़्त।

(7) तवाफ़ की खातिर खान-ए-काबा में दाखिले के वक़्त।

(8) कुर्बानी के तौरपर जानवर ज़िबह करते वक़्त।

(9) पैदा हुए बच्चे को नहलाते वक़्त।

(10) यौमे मीला-दुन्नबी (स.अ.) (17 रबी-उल-अव्वल)।

(11) दुआ-ए-बारां करने के लिये।

(12) एक ऐसे शख्स को देखने के बाद जिसे सही या ग़लत तौर पर फाँसी दे दी गई हो

(13) मय्यित को गुस्ल दिये जाने के बाद मस करने के लिये

(14) छिपकली को मारने के बाद।

## सोना, जागना और बैतुल खला में जाना

सूरज निकलने के बाद, मग़िब और इशा की नमाज़ों के दरमियान और अस्त्र की नमाज़ के बाद सोन मकरूह है और फ़ज़्र और सुरज निकलने के बीच सोना मना है।

- 1 .कैलूला करना (यानि दोपहर को सेना) सुन्नत है।
- 2 .सोने से पहले वुजू या तयम्मूम करके सोये तो जब तक वह सोया रहे ऐसे ही है जैसे कि नमाज़ पढ़ रहा है।
- 3 . सोते वक़्त दायें पहलू पर क़िब्ला -रू-होकर सोये और दायां बाजू अपने सर के नीचे रखें

## सोने के आदाब

इमाम मो.बाक़िर (अ.स.) से मर्वी है कि जब इन्सान अपना दायां हाथ अपने सर के नीचे रख कर बिस्तर में लेट जाये तो उसे चाहिये कि यह दुआ पढ़े:

बिस्मिल्लाहे, अल्लाह हुम्मा इन्नी अस-लमतो नफ़सी एलयका व वज- जैहतो वज-ही एलयका, व फ़व-वज़तो अमरी एलयका व अल-जैतो ज़हरी एलयका वता-

वक्कलतो अल्लैयका रहबतम मिनतो बे- किताबेकल लज़ी अन-ज़लता व-बे-  
रसूलेकल-लज़ी अर-सलता”

मैं अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ-याल्लाह. मैं अपनी जान तेरी हिफ़ाज़त में देता हूँ -अपना मुँह तेरी जानिब करता हूँ अपना मामला तुझे सौंपता हूँ तेरा सहारा लेकर लेटा हूँ मैं फ़क़त तुझ ही से डरता हूँ और तुझ ही से पनाह चाहता हूँ तेरी नाज़िल की हुई किताब और तेरे भेजे हुए रसूल पर ईमान ला चुका हूँ।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) भी पढ़ना चाहिये।

- 1.बे-सबब और जरूरत से ज़्यादा सोना।
- 2.किसी माकूल वजह के बग़ैर हँसना।
- 3.शिकमसेरी की हालत में कुछ और खाना।

आपने यह भी फ़रमाया कि शुरू में लोगों ने जिन छः आमाल के बारे में ना -  
फ़रमानी की,वे यह हैं:

1. दुनिया से मोहब्बत।
- 2 .सल्तनत से मोहब्बत।
- 3 . औरत से मोहब्बत।
- 4 . ख़राक से मोहब्बत।
- 5 . नींद से मोहब्बत।
- 6 . आसाश से मोहब्बत।

(1) मस्जिद में सोना मकरूह है।

(2) अगर इन्सान किसी मकान में अकेला हो और सोना चाहे तो उसे चाहिये कि यह दुआ पढ़े:-

अल्लाह हुम्मा आनिस वह शति व अ-इन्नी अला वह दती”

या अल्ला खौफ और परेशानी में मेरा मददगार रह और इस तन्हाई में मेरी मदद फ़रमा।

ऐसी छत पर सोना जिसका जंगला न हो ऐसी जगह सोना जहाँ दो रास्ते अलग होते हों और आलूदा हाथों के साथ सोना मना है।

(3) सोने से पहले और जाग उठने के बाद बैयतुल-खला में जायें

(4) सोने से पहले अल्लाह को याद करना और कर्आने मजीद की तिलावत करना सुन्नत हैं। इस सिलसिले में मुन-दर्जा ज़ैल सूरतो और आयतो को तिलावत की पुर ज़ोर सिफ़ारिश की गई है:-

(1.) सूर-ए-काफ़ेरून

(2.) सूर-ए-काफ़ेरून

(3.) सूर-ए-नास (इन दो सूरतो को मोअव्वज़ातैन भी कहा जाता है)

(4.) सूर-ए-इख़लास

(5.) आयतल कुर्सी

(6.) सूर-ए-साफ़ात की पहली दस आयात

(7.) सूर-ए-तकासुर

(8.) सूर-ए-तकासुर

(1) सूर-ए-फलक

बिस्मिल्लाह-हिर्रहमा-निर्रहीम०

कुल अ-ऊजो बे-रब्बिल फलके ० मिनशर्र मा-खलाका ०व मिन शर्र गासेकिन  
इजै ० व मिन शर्रिन नफफासाते फिल-उकदे ० व मिन शर्र हासे दिन इजा हसद  
०”

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है, कह दे कि मैं  
सुबह के परवरदिगार की पनाह माँगता हूँ हर उस चीज़ के शर से जो उसने खल्क  
की है, रात की तारीकी के शर से, और हासिद के शर से जब वह हसद करे।

(2) सूर-ए-नास

बिस्मिल्लाह-हिर्रहमान-निर्रहीम ०

कुल अ-ऊजो बे रब्बिन नासे० मलेकिन नासे ० इलाहिन नासे ० मिन शर्रिल  
वसवीसिल खन्नासिल लजी यो वसवेसो फी सुदूरिन नासे ०मिनल जिन्नते वन्नास  
०

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबाननिहायत रहम वाला है,कह दे मैं इन्सानों  
के परवरदिगार की इन्सानों के बादशाह की और इन्सानों के बादशाह की और  
इन्सानों के माबूद की पनाह माँगता हूँ (छुप जाने वाले शैतान) के वुसवास के शर

से जो इन्सानों के दिलों में वसवास डालता रहता है (चाहे) वह जिनों मे से हों या इन्सानो में से हों।

(3) सूर-ए-काफ़ेरून

बिस्मिल्लाह हिर्हमा-निर्हीम 0

.कुलया अय्योहल ताफ़ेरूना 0 ला-अअबुदो मा-तअबोदूना 0वला अन्तुम आबेदूना  
मा-अअबुद 0 वला अना आबेदुम मा अबत्तुम वला अन्तुम आबेदूना मा-अअबुद  
0लकुम दीनोकुम वलेया दीन 0

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है, कह दे कि ऐ  
इन्कार करने वालो,में उसकी बनदगी नहीं करूगाँ जिसकी तुम बनदगी किया करते  
हो, न ही तुम उसकी बनदगी करने वाले हो जिसकी मैं बनदगी करता हूँ न ही मैं  
उसकी बंदगी करने वाला हूँ जिसकी तुम बनदगी करते हो और न ही तुम उसकी  
बनदगी करने वाले हो जिसकी मैं बनदगी करता हूँ (पस) तुम्हारा दीन तुमहारे  
लिये और मेरा दीन मेरे लिये है।

(4) सुर-ए-इख़लास

बिस्मिल्लाह हिर्हमा-निर्हीम 0

.कुल हो वल्लाहो अहद 0 अल्लाहुस संमद लम यलिद वलम यूलद 0 वलम  
यकुल्लहू कुफ़ोवन अ-हद”

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है, कह देकि वह अल्लाह यकता (और यगाना) है अल्लाह बे नियाज़ है (जिसके सभी मौहताज हैं) न उसने किसी को जन्म दिया, ना ही वह खुद किसी से पैदा हुआ और उसका कोई हमसर (सानी, दुसरा) नहीं है।

(5) आयतुल कुर्सी

बिस्मिल्लाह हिर्रहमा-निर्रहीम 0

अल्लाहो ला इलाहा इल्ला होवा अल हय्युमो ला ताखुजोहू सिनातुंव वला नौमुन लहू मा फ़िस समावाते वमा फ़िल अर्ज़मनज़ल लज़ी यसफ़ओ इनदहू इल्ला बे इज़नेही यअलमो मा बैना अयदीहिम वमा खल फ़हुम वला योहीतूना बे शैइम मिन इल्मेही इल्ला बेमा शाआ वसेआ कुर्सियोहुस समावाते वल अर्जावला यओदोहू हिफ़ज़ोहुमा व होवल अलीयुल अज़ीम 0 ला इक रहा फ़िददीन खत तबय्यनर रूशदो मिनल ग़इये फ़मयं यक़फ़ुर बित तागूते व योअ मिम बिल्लाहे फ़क्रा-दिस तमसका बिल उर वतिल वुसक्रा लन फ़ेसामा लहा वल्लाहो समीउन अलीम अल्लाहो वलियुल लज़ीना आ-मन युखरेजोहुम मिनज़ ज़लोमाते एलन नुर वल लज़ीना कफ़ा-रू औलियाओ हुमुत तागूतो युखरे जू नहुम मिनन नुरे एलज़ जुलोमाते ऊलायाका असहाबुननीरे हुम फ़ीहा ख़ालेदुन”

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है,वही अल्लाह है कि उसके सिवा कोई माबुद नहीं वह हमेशा जिन्दा हर चीज़ का कायम रखने वाला है

न उसे ऊँग आती है न नींद जो कुछ आसमानों और ज़मीनों में है वह सब उसी का है। कौन है जो उसके हुजूर में बगैर उसकी इजाज़त के सिफ़ारिश करे वह (इन्सान) उसके इल्म में से किसी चीज़ का इदराक नहीं कर सकते सिवाय उसके जो वह (खुद) चाहे उसकी सलतनत आसमानों और ज़मीनों से वसीअ (बड़ी) है उसे इन दोनों की हिफ़ाज़त करने में कोई ज़हमत नहीं होती और वह बहुत आली मरतबत है।

दीन में कोई ज़ब्र नहीं क्योंकि हिदायत और गुमराहीमेंफ़र्क वाज़ेह हौ चुका है पस जिसने झूठे खुदाओं का इन्कार किया और अल्लाह पर ईमान लाया यकीनन उसने मज़बूत रस्सी को पकड़ लिया जो टुटनहीं सकती और अल्लाह सब सुनता जानता है अल्लाह सर परस्त है उनका जो ईमान लाये वह उन्हें गुमराही की तारीकियों सेहिदायत की रौशनी (नूर) की तरफ़ लाता है, वह जो (हक से) मुन्किर हो गये तो उनके कर परस्त शैतान हैं जो उन्हें नूर से तारीकियों की तरफ़ जाते हैं यही लोग अहले जहन्नुम है जो हमेशा उसमें रहेंगे।

(6) सू-ए-साफ़फ़ात (पहली दस आयतें)

बिसिमिल्लाह हिर्हमा निर्हीम)

वस्साफ़फ़ाते सफ़फ़न ० फ़ज़्जाजेराते ज़जरन ० फ़त तालेयाते ज़िकरन ०इन्ना-  
इला-ह-कुम ल-वाहेदुन ० रब्बुस समावातेवल अर्जेवमा बैयना हुमा व रब्बुल मशारेके  
० इन्ना ज़य्यन्नससमा अददुनिया बे जीनते-निल कवाकिबे ०हिफ़ज़म मिन कुल्ले

शैतानिम मारेदिन 0 ला-यस्सम-मऊना एलल मलाइल अअलाव युक्र-जफूना मिन कुलले जानेबिन 0 दोहरव व लहुम अजाबुन साकेबुन 0”

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है क़सम है उन (मौमिनों) की जो डाँटकर (बुराईसे) हटाते हैं नीज़ (और) क़सम है उन (आबिदों) की जो कुर्आन पढ़ते हैं कि बेशक तुम्हारा माबूद यकता है वह आसमानो, ज़मीनों और जो कुछ इनके बीच है सबका परवरदिगार और मश्रिकों (और मग़िरबों) का मालिक है।

बेशक हमने इस निचले आसमान को सितारों के ज़ेवर से सजाया और इसहर सरकश शैतान से महफूज़ रखा वे (शयातीन) बलन्द मरतबत फ़रिश्तों के कलाम की कन्सूइयाँ नहीं ले सकते। वे हर तरफ़ से ढकेले और धुतकारे जाते हैं और उनके लिये दायमी (हमेशा का) अज़ाब है मगर वे (शैतान) जिसने कोई बात उचक ली हो तो उसके पीछे एकतेज़ शोला लग जाता है।

(7) सूर-ए-साफ़फ़ात (आख़िरी दस आयतें)

“ व इन्ना जुन-दना लहुमुल गालेबून 0 फ़ता-ववल्ला अन्हुम हत्ता हीन 0 व अबसिर हुम फ़-सौफ़ा युबसेरून 0 अफ़ा-बे-अजाबेना यस-तअ-जेलूना 0 फ़0 इजा न-ज़ला बे-सा-हतेहिम फ़सा-अ सबाहुल मुनज़रीना 0 वता-वल्ला अन्हुम हत्ता हीनिंव व अबसिर फ़-सौफ़ा युबसेरूना 0 सुब्हाना रब्बेका रब्बिलइज़ज़ते अम्मा यसेफ़ना 0 व सलामुन अलल मुर-सलिना वल हम्दो लिल्लाहे रब्बिलआलमीन 0

और यकीनन हमारा लश्कर ही गालिब रहेगा पस ऐ (रसूल (स.)) इनकी हालत को देखते रहो और वे भी अनकरीब (अपना अंजाम) देख लें-क्या ये हमारे अज़ाब में ताजील पस जब वह (आज़ाब) इनके आँगन में उतर आयेगा तो जिन्हें उससे डराया जा चुका है, वह उनकी क्या ही जाओ उनकी हालत देखते रहो और अनकरीब वे खुद भी (अपना अंजाम) देख लें तुम्हारा साहिबे इज़्जत परवरदिगार मुनज़्जा है (पाक) है उन बातों से जो यह लोग बनाया करते हैं दुरूद व सलाम हौ अम्बिया-ए- मुरसलीन पर और तमाम तारीफ़ें तो जहानो के पालने वाले उसअल्लाह ही के लिये हैं।

(8) सूर-ए-तकासुर

बिस्मिल्लाह हिरहमा-निरहीम

अल- हाकुमुततकासुरो ० हत्ता जुरतुमुल मकाबेरा ० कल्ला सौफ़ा तअलामूना ० सुम्मा कल्ला सैफ़ा तअलामूना ०कल्ला लौ तअलामूना इल्मल यकीने ० लता-र-वुन्नल जहीम ० सुम्मा लता-र- वुन्नह ऐनलयकीन ० सुम्मा लतुस-अ-लुन्ना यौअ-एज़िन अनिन-नईम ०

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

तुम्हें तो नस्ल की बोतात (ज्यादती) ने गाफ़िल बना रखा यहाँ तक कि तुम कब्रों में जा पड़े। आगाह हो जाओ कितुम जल्दी ही जान लगे फिर आगाह हो जाओ कि तुम बहुत जल्द ही जान लगे फिर आगाह हो जाओ कि तुम बहुत जल्द

(इस गफ़लत का अंजाम) जान जाओगे। देखो अगर तुम यकीनी तौर पर जानते (तो हर्गिज़ गाफ़िल न होते) तुम लोग ज़रूर जहन्नम को देखोगे हाँ तुम उस यकीनी निगाहोंके साथ देखोगे फिर उस दिन तुम से नेमतों के बारे में भी ज़रूर पूछ ताछ की जायेगी।

मुन-दर्जाजैल (निम्नलिखित) बातों के अलावा रात भर जागना पसंदीदा ल नहीं है।

- 1 नमाज़े शब के लिये जागना
2. हासिले इल्म की खातिर और तिलावते क़आर्ने पाक के लिये।
3. उस दुल्हन का जागना जिसे शौहर के घर ले जाया जाये।

रात को बहुत ज़्यादा सोना और बहुत ज़्यादा जागना पसंदीदा फ़ैल नहीं है।

पेशाब करना

वह हालतें और जगहें जहाँ पेशाब करना मना है।

1. जहाँ पेशाब की छींटें इन्सान पर पड़े।
2. खड़े होकर पेशाब करना।
3. जानवरों के बिलों में पेशाब करना
4. पानी में पेशाब करना।
5. सड़कों और रास्तों में पेशाब करना।
6. मस्जिदों की दीवारों के साथ पेशाब करना।

7. घरों के चारों तरफ पेशाब करना।
8. मेवेदार पेड़ों के नीचे पेशाब करना।
9. जहाँ पेशाब करने से लोगों को तकलीफ होती है।

## पाखाने जाना

1. जब आप पाखाने जाना चाहें तो पहले बायां पाँव अन्दर रखें।
2. जब बैठ जायें तो बायें पाँव पर जोर डालें।
3. जब अपने पेशाब पाखाने पर नज़र पड़े तो आप यह गौर करें कि इसका माखज़ क्या था यह क्या चीज़ थी आपने कहाँ से हासिल की और अब इसकी क्या सूरत हो गई।
4. जब पेशाब कर चुकें तो इस्तिब्रा करना मुस्तहब है।
5. बदन का निचला हिस्सा ठण्डे पानी से धोना सुन्नत है चूँकि ऐसा करने से बवासीर के मर्ज़ से शिफ़ा हासिल होती है। पाखाने में बहुत देर तक बैठना मकरूह है, जैसा कि कहा गया है, लुकमान पैगम्बर ने अपने बेटे को हुक्म दिया था कि वह पाखाने के दरवाज़े पर यह इन्तेबाह (चेतावनी) लिख दे।  
“पाखाने में ज़्यादा देर तक बैठने से बवासीर का मर्ज़ लग जाता है ;
6. अल्लाह कौ याद करने के अलावा पाखाने में कोई और बात करना मकरूह है।

7. बैयतुल-खला (पाखाने) मे बैठे हुए शख्स को यह दुआ पढना चाहिये :

“अल्लाह-हुम्मर जुकनिल हलाला वजनुबनी अनिल हराम ,

याल्लाह; मुझे रिजके हलाल अता फ़रमा और मुझे हराम चीज़ों से महफूज़ रख।

8.इन्सान को चाहिये कि इस्तिन्जा करते वक्त यह दुआ पढे:

9. इस्लाम इन्सान को हर जगह और हर हालत में अल्लाह को याद करने का हुक्म देता है।

“अल्लाह-हुम्मा हस्सिन फ़र्जी वस्तुर औरती व हर्रिमनिन नारा व वककिफ़नी लेमा यो-कर्रेबुनी मिन्का या ज़ल-जलाले वल इकरामे “,

या अल्लाह मुझे (यानि मेरी शर्मगाहों को) ना-जायज़ चीज़ो से महफूज़ रख,उनके पोशीदा रखने में मेरी मदद कर और मुझे जहन्नम की आग से बचाना-याल्लाह अपने जलाल और बुजर्गी की बदौलत उन अहकाम की पैरवी की तौफ़ीक़ दे जिनके ज़रिये मैं तेरा कुर्ब (नज़दीक़ी) हासिल कर सकूँ।

10. उठते वक़्त इन्सान को चाहिये कि अपना हाथ पेट पर रखेऔरयह दुआ पढे:

“अलहम्दो लिल्लाहिल लज़ी हन्ना फ़ी तआमी व शराबी व आफानी मिनल बल्वा “

सबतारीफ़ें अल्लाह के लिये हैं जिसने मेरे खाने को हज़म होने के काबिल बनाया और मुझे उसकी तकलीफ़ो से बचाया है।

11. बैतुल-खला (पाखाने) से निकलते वक्त इन्सान को चाहिये कि पहले दायां पाँव बाहर निकाले और दुबारा अपना हाथ पेट पर रखकर यह दुआ पढे :

“अल्हमदो लिल्लाहिल लजी अर्रफ़नी लज़ ज़ता-हू व अबक्रा फ़ी जसा-दी कुव्वता-हू व अखरजा अन्नी अज़ाहो,या लहू मिननेअमतिन, नेअ-मतिल ला यक़देरूल कादेरूना क़द-रहा” ,

सब तारीफ़ें अल्लाह के लिये जिसने मुझे ग़िज़ा का मज़ा चखाया उसकी कुव्वत मेरे बदन में महफूज़ कर दी और उसकी ग़लाज़त को मेरे पेट से खारिज (निकाल) कर दिया।

हाँ.अल्ला की नेमते तो इतनी ज़्यादा हैं कि बड़े से बड़े हिसाबदँ भी उनको शुमार करने से आजिज़ है।

## बीमारिया और उनका इलाज

जब एक-ए-मोमिन बीमार होतो अल्लाह ताला एक फ़रिशते को मुकर्रर कर देता है ताकि वह उस शख्स के उन आमाल को लिखे जो उसने सेहत की हालत में अंजाम दिये हों।

1. बीमारी की हालत में आपको अपनी ज़बान पर हर्फ़ शिकायत नहीं लाना चाहिये, मसलन यह कहना कि

“मुझ पर एक ऐसी मुसीबत आ पड़ी है जो किसी और पर नहीं पड़ी होगी”  
और इसके अलावा भी इस तरह की कोई बात नहीं कहना चाहिये।

2. फ़स्द खुलवाना सेहत के लिये मुफ़ीद है।

3. पेट तमाम बीमारियों की जड़ और परहेज़ तमाम दवाओं की जान है। जब तक आपका बदन बीमारी को बदर्शत कर सके, दवाई न खायें।

अगर आप मुन-दर्जा ज़ैल उसूलो पर अमल करें तो आप हमेशा सेहतमन्द रहेंगे।

(1) खाना उस वक़्त खायें जब भूख लगे।

(2) पानी उस वक़्त पियें जब प्यास लगे।

(3) जब पेशाब की हाजत महसूस हो तो बिला ताखीर पेशाब करें

(4) जब तक ज़रूरी न हो नुजामेअतन करे।

(5) जब नीद, आजाये तो सोने में देर न करेम

(6) शहद हर मर्ज़ की दवा है

(7) मर्वी है कि तुम्हें अपने बीमारों का इलाज सदक़े सेकरना चाहिये क्योकि सदका बड़ी से बड़ी मुसिबत को टाल देता है।

(8) एक ग़ैर मुस्लिमतबीब (डाक्टर) से इलाज कराने में कोई हर्ज नहीं

(9) अल्ला ताला ने अपने एक नबी से फ़रमाया जब तक तुम अपना तिब्बी इलाज नहीं कराओगे मैं तुम्हें शिफ़ा न दूँगा।

(10) नाश्ता करते वक़्त ठण्डे पानी के साथ मिस्त्री की एक छोटी सी डली खाना बुखार से बचाओ के लिये मुफ़ीद है।

जैसा कि पेशतर कहा गया है, जब कोई शख्स किसी मुसीबतया बीमारी में गिरफ़्तार हो जाये तो उसे चाहिये कि मुसीबत से बचने की खातिर अमली तदबीर और बीमारी से बचाओ के लिये उसका तिब्बी इलाज करे फिर उसके साथ साथ अल्लाह ताला कि जो हर चीज़ का खालिक है उसकी बारगाह में दुआ भी करे कि वह इस तदबीर या इलाज में तासीर डाल दे यही वजह हैं कि इस सिलसिलें में बहुत सी आयतों और दुआओं का ज़िक्र आया है।

इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) से रवायत है कि इमाम अली (अ) ने अपने घर में एक कमरा अपने लिये मखसूस कर रखा था, जिसमे फ़क़त कुर्आन हकीम का एक नुस्खा और एक तलवार होती थी आप वहाँ इबादत (पूजा) किया करते थे।

एक मोअतबर हदीस में है एक मुसलमान को चाहिये कि तिलावते कुर्आन के ज़रिये अपने घर की आराइश व ज़ेबाइश करे और उसे कब्र न बना दे,यानि वह यहूदी और ईसाई लोगों का तरीका न अपनाये कि जो अपने घरों में जिक्रे इलाही नहीं करते और फ़क़त गिर्जों और इबादत खानों ही में इबादत करते है। जिस घर में क़आर्ने मजीद की ज़्यादा तिलावत की जाये उसकी हालत सुधर जाती है उसके मकीन एक इत्मीनान महसूस करते और आसमान वाले सितारों से रौशन हासिल करते हैं।

कुरआने मजीद की तिलावत सेहत के लिये मुफ़ीद है और इस सिलसिले में सूर-ए-फ़ातिहा और आयतुल कुर्सी पढ़ने पर बार बार ज़ोर दिया गया है।

सूर-ए-फ़ातिहा

“ बिस्मिल्लाह-हिरहमा-निरहीम

अल्हम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन 0अरहमा निरहीम मालिके यौमिद्दीन0  
इय्याका नअबुदो व इय्याका नस-तईन एहदिनस सिरातल मुस्तकीमा 0सिरातल  
लजीना अनअम्ता अलैयाहिम गैरिल मगज़ूबे अलैयाहिम वलज़ ज़ाल्लीन 0”

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है तमाम तारिफ़ें अल्लाह के लिये हैं जो तमाम ज़हानों का पालने वाला मालिक है (ऐ अल्लाह) हम सिर्फ़ तेरी ही इबादत करते हैं (इसके लिये) तुझ ही से मदद माँगते हैं हमें सीधे रास्ते की हिदायत फरमा जो उन लोगों का रास्ता है जिन पर तेरा इनाम हुआ न उनका रास्ता कि जिन पर तेरा ग़ज़ब हुआ और न गुमराहों का

आयतल कुर्सी

आयतल कुर्सी और उसका तर्जुमा इससे पहले लिखा जा चुका है।

दुआ-ए-नूर

रवायत है कि यह दुआ-ए-नूर बीबी फ़ातिमा ज़हरा (अ0) ने सलमाने फारसी को सिखाई और उनसे कहा अगर तुम इस दुनिया में कभी भी बुखार में मुबतला नहीं होना चाहते हो तो यह दुआ रोज़ाना पढ़ा करो फिर सलमान ने यह दुआ एक हज़ार

ऐसे अशखास को सिखाई जो बुखार में मुबतला थे और वह सबके सब शिफ़ायाब हो गये ,वह दुआ यह है :

बिस्मिल्लाह हिर्हमा निर्हीम

बिस्मिल्लाहिन नूरो 0 बिस्मिल्लाहे नूरून नूरे 0बिस्मिल्लाहे नूरून अलन नूरे 0  
बिस्मिल्लाहे लजी होवा मुदब्बेरूल उमूरे 0बिस्मिल्लाहिल लजी खला- कन नूरा  
मिनन नूरे 0 अल्हम्दो लिल्लाहिल लजी खला-कन-नूरा मिनन नूर व अनज़लन  
नूरा अलत तूरे फ़ी किताबिम मस्तूरे फ़ी रक्क़िम मन्शूरिन बे-कदा-रिम-मक़दूरिन  
अला नबिय्यिम महबूरिन 0 अल्हम्दो लिल्लाहिल लजी होवा बिल-इज़जे मज़कूरून  
व बिल-फ़ख़्रे मशहूरून व अलस सराय वज़ ज़राये मशकूरून व सल्लल्लाहो अला  
सययेदेना मोहम्मदिंव व आलेहित ताहेरीन 0”

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है अल्लाह के नाम से जो रौशन करने वाला है अल्लाह के नाम से जो रौशनी के ऊपर रौशनी है अल्लाह के नाम से जो निज़ामें आलम का तरतीब देने वाला है अल्लाह के नाम से जिसने रौशनी को रौशनी से पैदा किया तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लियेहैं जिसने रौशनी को रौशनी से पैदा किया और रौशनी को पहाड़ (तूरे सीना) पर नाज़िल किया जिसका ज़िक्रसतरों वाली किताब मों हैं जो उम्दा चर्म पर लिखी है जिसे बुजुर्गी और शान वशौकत के साथ याद किया जाता है और बुजुर्गी औरशान व शौकत के साथ याद किया जाता है और जिसका शुक्र खुशहाली में और परेशानी में

भी अदा किया जाता है हमारे खुशहाली में और परूशानी में भी अदा किया जाता है हमारे सरदार मोहम्मद मुस्तफ़ा (स. अ.) और उनकी पाक व पाकीज़ इतरत पर खुदा का दुरूद व सलाम हो

1. नाश्ते के तौर पर सलाद और खजूरे खाने के अलावा दूध पीने की ताकीद की गयी है।

2. कई हदीसों में आया है कि “लाहौल” पढने से ग़म दुरहो जाता है।

“ला-हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यल अज़ीम”

कोई ताक़त और कुव्वत नहीं सिवाय उसके जो बलन्द और बुजुर्ग़ ख़दा से (मिलती) है।

3. सैय्यदुश शोहदा हज़रत इमाम हुसैन (अ.स.) के रौजेकती खाक पाक शिफ़ा बख़्श है, ब-शर्ते कि इस बात पर आपका यक़ीन हो और आप उसे मटर के एक दाने से ज़्यादा इस्तेमाल न करें।

4. अगर कोई शख़्स अपने एक मुसलमान भाई की अयादत (बीमार को देखने जाना) के लिये जाये तो उस दिन सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उस पर सलाम भेजते हैं। अपने बीमार आदमी की दुआ की तरह होती है और जल्दी क़बूल होती है।

5. अगर आप एक बीमार की अयादत के लिये जायें तो अपने साथ उसके लिये सेब, बेही चकोतरा या इत्र लेते जायें।

## मुआशरती हुक्क (सामाजिक अधिकार)

एक शख्स रसूले अकरम (स.) की खिदमत में आया और अर्ज किया या रसूलल्लाह (स.अ) आप मुझे जिन्दगी बसर करने का ऐसा तरीका बतायें कि जिसकी बदौलत में बेहिशत का हकदार हो जाऊँ----हज़ूर (स.अ.) ने फ़रमाया तुम उनसे अपने लिये चाहते हो पस जो चीज़ तुम अपने लिये पसन्द नहीं करते वह दूसरों के लिये भी पसन्द न करो।

चुनाँचे इस्लामी तालीमात कि वह दूसरो का सरदार है औरहर चीज़ का महवर है उसे चाहिये कि वह दूसरों का सरदार है और हर चीज़ का महवर है उसे चाहिये कि वह दूसरों को भी यही रूत्बा दे जो अपने को देता है यह तालीम इस्लाम के फ़लसफ़-ए-मुसावात पर मब्नी (निर्भर) है जिसके मुताबिक़ तमाम इन्सान आपस में बराबर हैं। जैसा कि रसूले अकरम (स.अ.) का इरशाद है सबसे बड़ी फ़ज़ीलत यह है कि इन्सान इन्साफ़ पर मब्नी फ़ैसला करे चाहे वह फ़ैसला उसके अपने दीनी भाई को अपने बराबर समझो और हर हालत में अपने अल्लाह को याद रखो।

यही वह सिफ़त है जो ईमान का मेयार है और इन्सान और इन्सानी मुआशरे के लिये मूजिबे इफ़तेखार है। जब एक इन्सान यह चाहता है कि दसरे उसकी इज़्जत करें उसके सामने सच बोलें,उसकी मदद करें उससे खुलूस बर्ते, उसके हुक्क अदा करें और उसके साथ खुशखल्की के साथ पेश आयें तो उसे भी दूसरों के साथ ऐसा ही बर्ताव करना चाहिये यानि वह भी उनकी इज़्जत करे उनके

सामने सच बोले, उनकी मदद करे उनसे खुलूस बर्ते,और उनके हकूक अदा करे और उनसे खुश खुल्की से पेश आये। क्योंकि अस्लमें उसके और दूसरो के दरमियान कोई फ़र्क नहीं है। इसी तरह जब वह इस बात को पसन्द नही करता कि दूसरे उसे बदनाम करें, उसकी बुराई करे उस पर इल्जाम लगायें, उसकी तरक्की की राह में रोड़े अटकायें या उसके साथ घमण्ड से पेश आयें तो फिर उसे भी उनसे बद सुलूकी नहीं करनी चाहिये उसे भी हर किस्म के ज़ल्म और सितम व ज़्यादती से बाज़ रहना चाहिये। और महसूस करना चाहिये कि दूसरे भी उसी की तरह इन्सान हैं उसे चाहिये कि उनके ग़म और खुशी में शरीक हों लिहाज़ा बनी-नौ-ए-इन्सान कौ फ़ायदा पहुँचाना और मुआशरे की ख़िदमत करना कुर्बे इलाही के वसीले हैं।

## सिल-ए-रहमी

कोई अमल ऐसा नहीं जिसका बदला इतनी जल्दी मिलता हो जितनी जल्दी सिल-ए-रहमी का बदला जल्दी मिलता हो जितनी जल्दी सिल-ए-रहमी का बदला मिलता है पस जो शख्स रिशते दारी के ताल्लुकात को तोड़ देता है वह बेहिश्त में दाखिल नहीं होगा।

## हमसायों के हुक्क (पड़ोसियों के अधिकार)

इस्लाम में हम सायों के हुक्क को बड़ी अहमियत दी गई है जैसा कि रवायत है कि रसूले अकरम (स.अ.) ने फ़रमाया, जिब्रईल ने मुझे हमसाये के साथ हुस्ने सुलूक के बारे में अक्सर सिफ़ारिश की,हता कि मैं ने खयाल किया कि शायद वह विरासत में भीहमसाये का हिस्सा वह बेहिशत की खुशबू नही सूँघेगा।

1. इमामे सादिक (अ.स.) से रवायत है कि आपने फ़रमाया जो लोग एक आदमी के दोनो तरफ़ में चालीस घरों मे रहते हैं उसके हमसाये हैं।

2. हमसाये के मुखतलिफ़ हुक्क में से एक हुक “माअन” हैं इसके माना (अर्थ) उस कर्ज़ के हैं जो हम साये को दिया जाये या वह एहसान जौ उसके साथ किया जाये या वह चीज. जो घरेलू जरूरयात के सिलसिले में उसे मुस्तआर (अस्तआई रूप से) दी जाये।

3. यतीम के हुक्क (अनाथ के अधिकार)

(1) यतीम का माल ग़ज़ब करना गुनाहे कबीरा है।

(2) यतीम को चुम्कारने और प्यार करने का बड़ा सवाब है।

(3) ऐसी बहुत सी हदीसैं हैं जिनके मुताबिक यतीम की परवरिश करना और उसके खर्चों की जिम्मेदारी लेना बड़े सवाब का काम है।

## दीनी भाईयों के हुक्क

1. भाई एक निहायत ही पंसदीदा फ़ेल है।
2. एक सालेह भाई के चेहरे पर निगाह डालना, ख़दा की इबादत बजा लाने के बराबर है।
3. एक मोमिन दूसरे मोमिन का भाई है वह उसकी आँखोंकी तरह है और उसका रहनुमा है वरना तो अपने दीनी भाई से बे वफ़ाई करता है और न ही उस पर जुल्म करता है वह न उसे धोका देता और न उससे किया हुआ वायदा तोड़ता है वह न उस भाई से झूठ बोलता है और न उसकी ग़ीबत (निन्दा) करता है।
4. आप अपने किसी दोस्त को अपने सारे राज़ (भेद) न बतायें कही ऐसा न हो कि एक दिन वही आपका दुश्मन बन जाये।
5. जो शख्स किसी पर तोहमत (इल्ज़ाम) लगने का सबब बन जाये उसे उस आदमी को मलामत नहीं करनी चाहिये जो उसके मुताल्लिक बुरी राय रखना हो।
6. जब आप किसी से बरादराना ताल्लुकात कायम करें तो उसका जो अमल देखें उसे अच्छा माना (अर्थ) पहनायें सिवाय इसके जब नौबत यहाँ तक पहुँच जाये कि आप उसकेबारे में अच्छी राय कायम न कर सकें इसके अलावा उस पर शक करने से भी परहेज़ करें।
7. उन लोगों से मश्धिरा कीजिये जो अल्लाह से डरते और उसके अहकाम की पैरवी करते हैं।

8. अपने दीनी भाइयों से उनके तकवे के मेयार के मुताबिक मोहब्बत करें।
9. बुरी औरतों से बचें और जो अच्छी हों उनसे मोहतात रहें।

मोमिनीन के एक दूसरे पर बहुत से हुक्क हैं और जैसा कि इमाम जाफरे सादिक (अ.स.) से मन्कूल है उनमें से सहल और आसान यह हैं :-

1. आप किसी मोमिन के लिये वही पसन्द करें जो खुद अपने लिये पसन्द करतें और वह नापसन्द करें जो अपने लिये नापसन्द करते हैं।

2. आप उसके उज्र को कुबूल करलें और उसकी खता से दर गुजर करें।

3. जरूरत के वक़्त रक़म जिन्स (चीज़ों) से उसकी मदद कर दिया करें।

4. आपको उसकी आँखे, उसका रहनुमा और उसका आईना बन जाना चाहिये।

5. आपको चाहिये कि वह भूखा हो तो खुद सेर न हों, वह प्यासा हो तो अपनी प्यास न बुझायें और वह बर्हना होतो खुद लिबास न पहने यानि यह चीजे अपने से पहले उसको मोहय्या (उपलब्ध) करें।

6. अगर आपके पास मुलाज़िम हो और उसके पास न हो तो आप पर लाज़िम है कि अपने मुलाज़िम को उसके पास भेजें, ताकि वह उसका बिस्तर लगा दे।

7. आपको चाहिये कि वह क़सम ख़ाये तो उसकी तसदीक करें वह आपको अपने घर बुलाये तो उसकी दावत कुबूल करले कर लें, वह बीमार पड़े तो उसकी अयादत को जायें, अगर वह फ़ौत (मर) हो जाये तो उसके जनाज़े की तशीअ करें (साथ

जायें) , अगर आपको पता चले कि उसे किसी चीज़ की की ज़रूरत है तो पेशतर इसके कि वह आपसे माँगे उसकी ज़रूरत पूरी कर दें। पस आप ऐसा करेंगे तो जब ही आप उसके साथ अपना ताल्लुक कायम करेंगे और आप उससे दोस्ताना और बरादराना रवाबित मुस्तहकम करेंगे।

8. इमाम मोहम्मद बाकिर (अ.स.) से नक़ल किया गयाहैं किआपने फ़रमाया “यहलाजिम है कि तुम मख़्लूक केसाथ करीमुन नफ़सी का बर्ताव करो,क्यों कि अल्लाह की निगाह में इससे अच्छा कोई फ़ेल (काम) नहीं है।

9. अल्लाह को इससे ज़्यादा कोई इबादत पसन्द नहीं कि एक मोमिन को खुश किया जाये।

10. एक मोमिन के सामने मुस्कुराना एक पसन्दीदा फ़ेल है और उसके बदन से गर्द व गुबार को झाड़ना भी एक अच्छा फ़ेल है।

11. मौमेनीन की हाजत बर-आरी की कोशश करना बड़े सवाब का काम है। (ज़रूरत को पूरा करना)

12. अगर आप एक ऐसे शख्स को देखे जो उम्र में आपसे बड़ा हो तो आपको कहना चाहिये “यह शख्स ईमान और नेक आमाल के मामले में मुझ पर सबक़क़त ले गया है ले गया है लिहाज़ा यह मुझ से बेहतर है। इसी तरह अगर आपअपने से कम उम्र के आदमी को देखें तो कहें “मैं ने इससे ज़्यादा गुनाह किये हैं लिहाज़ा यह मुझसे बेहतर है” और जब आप किसी अपने हम उम्र शख्स को देखें तो कहें

“मुझे अपने गुनाहों का यकीन है लेकिन इसके गुनाहों के बारे में शक है लिहाजा मैं शक के मुकाबिल यकीन को कैसे नज़र अन्दाज़ कर सकता हूँ “जब आप देखे कि लोग आपकी इज़्जत करते हैं तो आपको कहना चाहिये “यह उन्हीं की अच्छाई है कि वे अच्छे अखलाक व अतवार का मुजाहिरा करते हैं” लोग आपसे दूर रहें और आपकी इज़्जत न करें तो आपको कहना चाहिये “ इसकी वजह मेरे वे गुनाह हैं जिनको मैं ने किया है” अगर आप ऐसा करेंगे तो आपकी ज़िन्दगी चैन से गुज़रेगी, आपके दोस्तों में इजाफ़ा होगा और आप लोगों की अच्छाई से खुश होंगे और उनकी बद सुलूकी पर गमगीन नहीं होंगे।

13. एक मोमिन भाई को अल्लाह की खातिर जाकर मिलने का बड़ा सवाब है और बेहतर है कि मुलाकात के वक़्त अहले बैत (अ.स.) के इरशादात के मुताल्लिक गुफ़्तुगू की जाये।

14. एक मोमिन भाई को खाना खिलाने की बड़ी ताकीद की गई है।

रसूले अकरम (स.अ.) से रवायत है कि आपने फ़रमाया यह तीन आमाल अल्लाह ताला की निगाह में बहुत महबूब है।

(क) एक भूखे मुसलमान को पेट भरके खाना खिलाना

(ख) एक कर्ज़दार का कर्ज़ा अदा करना।

(ग) एक मुसलमान को किसी मुसीबत से रिहाई दिलाना।

इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ.स.) से रवायत है कि आपने फ़रमाया अगर एक शख्स के पास ज़्यादा लिबास हो और उसे इल्म हो जाये कि उसके एक मोमिन भाई को उसकी ज़रूरत है,लेकिन वह उसे न दे तो अल्लाहताला उसे सर के बल जहन्नम में झोंक देगा।

15. रसूले अकरम (स.अ.) से रवायत है कि आपने फ़रमाया अगर कोई शख्स पेट भर के खाये जब कि उसका मुसलमान भाई भूखा हो तो वह शख्स मेरी नबुव्वत पर ईमान नहीं रखता।

16. रसूले अकरम (स.अ.) ने फ़रमाया जो शख्स मुसलमान के रास्ते से एक काँटा हटा दे वह जन्नत में दाखिल होगा। एक और हदीस में आपने फ़रमाया जो शख्स मुसलमानों के रास्ते से कोई ऐसी चीज़ हटा दे जो उनके लिये ज़हमत का मूजिब हो तो अल्लाह ताला उख्स को कुर्आन मजीद की चार सौ आयातकी तिलावत के बराबर सवाब अता करता है।

17. मुसलमानों का एक दुसरे को तोहफ़े भिजवाना मुस्तहब है वह तोहफ़ा बहुत ही अच्छा है जो सिर्फ़ अल्लाह की खातिर और किसी दुनियावी गरज़ के बग़ैर भेजा गया हो।

18. जो शख्स किसी मोमिन को उसकी ज़बों हाली की बिना पर हकीर और काबिले नफ़रत समझे, अल्लाह ताला उसे क़यामत के दिन तमाम मख़्लूक के

सामने रूस्वा करेगा एक और रवायत में है कि जो शख्स किसी मोमिन को जलील करे अल्लाहा ताला उसे भी जलील करेगा।

19. हदीसे कुदसी में अल्लाह ताला फ़रमाता है जो शख्स किसी मोमिन को दिर्क (परेशान) करे वह मेरे साथ लड़ने की तैयारी करता है।

20. इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) से रवायत है कि आपने फ़रमाया: जो शख्स किसी मुसलमान को नुक़सान पहुँचाने की खातिर आधे लफ़्ज़ से भी मदद दे, क़यामत दिन उसकी आँखों के बीच यह अल्फ़ाज़ लिखे जायेंगे:

21. एक मोमिन को मोमिन इस लिये कहा जाता है कि लोगों किजान और माल वगैरा (सब कुछ) उसके तारूज़से महफूज़ रहता है-

मुस्लिम वह है जिसके हाथ और ज़बान से लोग महफूज़ हों-“मुहाजिर” वह है जो गुनाहोंसे हिजरत करे (यानि दुरी इख़तेयार करे)।

रसूले अकरम (स.अ.) ने फ़रमाया :

“मैं उस परवरदिगार की क़सम खाकर कहता हूँ जिसके क़ब्ज़-ए-कुदरत में मेरी जान है कि अगर आसमान और ज़मीन के तमाम रहने वाले मिलकर एक मोमिन को क़त्ल कर दें या उसके क़त्ल परमुत्तफ़िक़ हो जायें तोअल्लाह उन सबको जहन्नम वासिल कर देगा।

मैं उस परवरदिगार की कसम खाता हूँ, जिसके कब्ज़-ए-कुदरत में मेरी जान है कि कोई किसी को बिला जवाज़ कोड़ानहीं मारता मगर यह कि उसे जहन्नम में उसी तरह कोड़े लगाये जायेंगे।

रसूले अकरम (स.अ.) ने यह भी फ़रमाया अगर एक शख्स एक बूढ़े आदमी के बूढ़ापे की बिना पर उसकी इज़्जत और ताज़ीम करे अल्लाह ताला कयामत के दिन उसे खौफ़ से महफूज़ रखेगा,आपने यह भी फ़रमाया: “एक सफ़ेदरीश (सफ़ेद दाढ़ी) मोमिन की ताज़ीम करना हकीकत में अल्लाह ताला की ताज़ीम है” -

हज़रत (स.अ.) ने फ़रमाया :जो शख्स छोटों पर मेहरबान न हो और बड़ों का अदब न करे वह हममें से नहीं है “

इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) से रवायत है कि आपने फ़रमाया :-

“अगर तुम कोईबात एक बहरे शख्स को इस तरह समझाओ कि वह सुनले और तुमहें भी नागवार न गुज़रे तो तुम्हारा यह फ़ेल सदक़ा शुमार होगा। “

## (5.) ज़ालिम लोगों के साथ मेल जोल

1. इन्सान को चाहिये कि ज़ालिमो के साथ मेल जोल रखने से परहेज़ करें
2. जो शख्स किसी ज़ालिम बादशाह या हाकिम की तारीफ़ करे और दुनियावी फ़यादे की खातिर अपने आप को उसके सामने ज़लील करे वह जहन्नम में ज़ालिम हाकिम का साथी होगा।

3. फ़ासिक व फ़ाजिर के साथ मिलकर खाना पीना मना है।
4. ज़ालिमों के कामों में उनके साथ शरीक होना उनकी मदद करना और उनकी ज़रूरत (आवश्यकताएँ) पूरी करने की कोशिश करना कुफ़्र के बराबर है।
5. अगर कोई आदमी किसी अमीर आदमी से मिलने जाये और उसकी दौलत की बिना पर अपने आपको उसके सामने ज़लील करे वह अपना दो तिहाई ईमान खो बैठता है।
6. जो शख्स किसी बादशाह के दरबार में हो और वह ल लोगों को उसके ज़ुल्म व सितम से बचाये मुसलमानों के हालात को बेहतर बनाये और लोगों खसतौर से मोमेनीन की आवश्यकताओं को पूरा करे तो वह सच्चा मोमिन और तमाम ज़मीन पर अल्लाह का अमीन है।
- 7 रवायत है कि तक़य्ये में बड़ी फ़ज़ीलत है जैसा कि हदीस में है कि जो शख्स तक़य्या न करे वह ईमान नही रखता और तक़य्य ईमान का 1/10 हिस्सा है।
8. तक़य्या हर उस चीज़ में ज़रूरी है जिसमें इन्सान को नुक़सान पहुँचने का इम्कान हो सिवाय खून बहाने के कि इसमें कोई तक़य्या नहीं है। (यानि इन्सान को खून बहाने से परहेज़ करना चाहिये)
9. इन्सान को चाहिये कि ग़ैर मुस्लिमों से इतनी गहरी दोस्ती पैदा न करे (कि जिससे खुद उसके ईमान या उम्मत मुस्लिमा को नुक़सान पहुँचे।

## (6.) सलाम

1. तवाज़ोअ (सत्यकार) के इज़हार का एक तरीक़ा यह है कि आप जिस किसी से मिलें उसे सलाम कहें (यानि “सलाम अलैयकुम” कहकर उसके हक़ में दुआ-ए-ख़ैर करें इसके माना है तुमपर सलामती हो)

2. रवायत है कि एक नौ उम्र आदमी को मुक़ाबलतन अपने से बड़े को सलाम कहना चाहिये एक राहगीर उस शख्स को सलाम कह जो बैठा हुआ हो एक छोटा गिरोह बड़े गिरोह को सलाम कहे और एक छोटा गिरोह बड़े गिरोह को सलाम कहे और एक सवार पैदल चलने वाले को सलाम कहे।

3. अगर कोई शख्स एक गरोह को सलाम कहे और उनमे से कोई एक जवाब देदे तो बाकी लोगों पर जवाब देने की ज़िम्मेदारी साक़ित हो जाती है।

4. किसी नौजवान औरत को सलाम कहना मकरूह है (जब कि बूढी औरतों को सलाम कहने में कोई हर्ज नहीं है)

5. एक शख्स के साथ हाथ मिलाने से सलाम मुकम्मल हो जाता है जो शख्स सफ़र से वापस आये उसके साथ गले मिलने से सलाम मुकम्मल हो जाता है।

इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) ने फ़रमाया, जब रसूले अकरम (स.अ.) किसी से हाथ मिलाते थे तो आप उस वक़्त तक हाथ नहीं खींचतेथे जब तक वह अपना हाथ नहीं खींच लेता था।

(क) एक और हदीस में रसूले अकरम (स.अ.) ने फ़रमाया, इन्सान को हाथ मिलाना चाहिये क्योंकि हाथ मिलाने से नाचाक्री ख़त्म होती है।

(ख) अपनी बीवी और बच्चे के अलावा किसी का बोसा लेना मुनासिब नहीं है। लेकिन दीनी भाई के एक रूख़सार (गाल) या माथे का बोसा लेना चाहिये और अगर एक शख़्स आलिमे दीन हो तो उसके हाथ का बोसा भी लेना चाहिये।

(ग) इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) ने फ़रमाया, हमारे पैरोओं (अनुयायियों) की पेशानी में एक रोशनी होती है, जिसकी बदौलत दुनिया के लोग उन्हें आसानी से पहचान लेते हैं पस जब वे आपस में सलाम व दुआ करें तो उन्हें एक दुसरे का माथा चूमना चाहिये।

## (7) मुआशरती आदाब

1. जब आप किसी जमाअत में शामिल होना चाहें तो पहले इत्मीनान कर लें कि यह ऐसी जमाअत तो नहीं कि जिससे आप पर शक किया जाये या इल्जाम लगाया जाये अगर इस बिना पर लोगों की राय आपके बारेमें ख़राब हो जाये तो उसकी तमाम तर जिम्मेदारी ख़ुद आप पर होगी।

2. अगर किसी महफ़िल में ऐसे लोग मौजूद हो जो आपसे ज़्यादा इल्म रकते हो तो आप उनकी जगह से बलन्दतर जगह पर न बैठे, बल्कि आपको चाहियें वहाँ आप किसी ऐसी चीज़ के बारे में गुफ़्तुगू न करें जिसका आपको इल्म न हो।

3. अगर आप किसी ऐसी जगह बैठें जो आपके मर्तबे और मक़ाम से फ़रोतर (कम) हो तो इसमें कोई हर्ज नहीं, बल्कि यह फ़रोतनी (खाकसारी) की निशानी है।

4. जब आपको किसी ज़ियाफ़त (खान पान) में बुलाया जाये तो उस जगह बैठें जो साहिबे खाना आपके लिये तजवीज़ करे।

एक हदीस में हैं कि जिन मक़ामात पर जाने के लिये एक इन्सान का अपने घर से निकलना बेहतर है वह ये है।

(क) हज या उमराह अदा करने के लिये बैतुल्लाह (काबे) जाना।

(ख) उलमा -ए-दीन के घरों पर जाना, जिससे इन्सान को फ़यदा पहुँचता है और वह उनसे दूर हो कर घाटे में रहता है।

(ग) दीनी या दुनियावी इल्म हासिल करने के लिये उलमा से मुलाक़ात करने जाना।

(घ) सखी (धनी) लोगों के घरों पर जाना” जो क़यामत के दिन अज़्र (सवीब) पाने के लिये अपनी दौलत दूसरों को दे देते हैं।

5. किसी बेवक़ूफ़ शख्स के यहाँ जाना कि कुछ हालात इन्सान को ऐसे लोगों के एहसान का बार उठाने पर भी मजबूर कर देते हैं।

6. इज़ज़त के हुसूल और हाजत बरआरी के लिये मालदार लोगों के घरों पर जाना।

7. सलाह मशवरे के लिये ऐसे लोगों के पास जाना जिन्हें लोग जिम्मेदार समझते हों और उनकी माकूलियत पसन्दी और मुस्तकिल मिजाजी की बिना पर उनसे बहुत से फ़ायदे की उम्मीद की जा सकती हो।

8. एक दीनी भाई के घर जाना क्योंकि एक मोमिन का अख़लाक़ी फ़रीजा है कि वह दूसरे मोमिन का खयाल रखे।

9. अपने दुश्मनके घर जाना (जब कि उसमें खतरा न हो) क्यों कि इन्सान अक्सर आता जाता रहे तो दुश्मनी मांद पड़ जाती है और ग़लत फ़हमी दुर हो जाती है।

10. ऐसी महफ़िल में जाना जहाँ इन्सान और फ़य्याज़ी के जज़बात पैदा हो जायें।

इमाम जाफ़रे सादीक (अ.स.) से रवायत है कि आपने फ़रमाया

(क) जो शख्स एक तंग जगह पर चार जानू होकर यानि आल्टी पाल्टी मारकर बैठे वह इन्सान ही नहीं है।

(ख) जब कोई शख्स आपसे मिलने आये तो चन्द क़दम आगे बढ़कर उसका इस्तक़बाल करें जब वह जाने लगे तो दरवाज़े तक उसे छोड़ने जायें और जो कुछ करने को कहे वह करें।

इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) से रवायत है कि आपने फ़रमाया

(1) अपनी जगह से उठकर किसी का इस्तक्रबाल करना मकरूह है सिवाय उस शख्स के जिसकी उसके ईमान (मसलन इल्म, आला,अख्लाक, और नेकी) की वजह से इज्जत की जाती हो।

(2) आपको एक ऐसे साथी का इन्तेखाब करना चाहिये जो आपको अल्लाहकी याद दिलाये, इल्मे दीन सिखाये,आखेरत के लिये अमले खैर करने का शौकदिलाये और दुनिया में और आखेरत में आपकी बेहतरी चाहे।

एक और हदीस में आपने फ़रमाया, जिन चार अफ़आल (कामों) की कोई फ़सल नहीं काटी जाती वे यह है।

(क) उस शख्स से मोब्बत करना जो आपकी मोहब्बत का जवाब न दे।

(ख) एक ऐसे शख्स पर एहसान करना जो आपका एहसान कुबूल करने को तैयार न हो।

(ग) एक ऐसे शख्स को इल्म सिखाना जो उसकी कद्र न करे।

(घ) अपना भेद ऐसे शख्स को बताना जो उसे अपने दिल में न रख सके

एक हदीस में आया है कि सहाबा-ए- केराम नेरसूले अकरम (स.अ.) से पूछा हम किस की सोहबत में रहें ?

हज़रत (स.अ.) ने फ़रमाया, तुम उन लोगों की सोहबत में रहे जिनके दीदार से तुम्हें अल्लाह की याद आये,जिनके अहवाल तुम्हारे इल्म कोबढाये और जिनके आमाल तुम्हें हक़ व हक़ीकत के करीब ले आये।

1. अगर एक शख्स देखे कि उसका दीनी भाई ना मुनासिब काम कर रहा है और वह उसको न रोके तो वह हक्के

बरादर (भाई के अधिकार के मामले में उससे गददारी करता है।

2. इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) ने फ़रमाया मैं उस शख्स को अपना बेहतरीन दोस्त तसव्वुर करता हूँ जो मेरे उयूब (ऐबों) को मुझपर जाहिर कर दे।

3. अगर एक दोस्त ईमान के मामले में आपको कुछ फ़ायदा न पहुँचाये। तो उसकी तरफ़ कोई तवज्जो न दें और उससे मेल जोल की खवाहिश न रखें।

रसूले अकरम (स.अ.) से रवायत है कि आपने फ़रमाया चार ऐसी हैं जो दिल को मुर्दा कर देत हैं।

(क) मुसलसल (बराबर, निरन्तर) गुनाह करना।

(ख) औरत से ज़्यादा बातें करना।

(ग) एक ऐसे आदमी से बहस मुबाहिसा करना जिससे तुम एक बात कहो तो वह कोई दूसरी कह और हकीकत को तसलीम न करे।

4 .मर्द से मेल जोल रखना।

हाज़िरीन ने कहा, या रसूलल्लाह ये मर्दे कौन हैं ? आपने फ़रमाया वे दौलत मंद लोग जिन्होंने अल्लाह को भुला दिया है।

रसूले अकरम (स.अ.) ने फ़रमाया अल्लाह ताला नहीं चाहता कि उसके रसूल में छः आदतें हों।

- (क) नमाज़ पढते वक़्त अपनी दाढ़ी या कपड़ें से खेलना।
- (ख) रोज़े की हालत में बदज़बानी करना।
- (ग) दूसरे जितलाना कि तुमने उसे खैरात देकर एहसान किया है।
- (घ) नजिस होने की हालत में मस्जिद में दाखिल होना।
- (ङ) क़ब्रिस्तान में हँसना
- (च) दूसरे लोगों के घरों में झाँकना।

## छीक

जब आपको छीक आये तो यह पढ़े

“अलहम्दो लिल्हे रब्बिल आलामीन व सल्लल्लहो अला मोहम्मदिन व अहले बैयतेही”

तमाम तारीफें अल्लाह के लिये हैं जो सब जहानों का परवरदिगार है।

मोहम्मद मुस्तफा (स.अ.) और उनके अहले बैत (अ.स.) पर दरूद व सलाम हो।

जो शख्स छीके उससे यह कहें

“यर-हमोकल्लाहो”

अल्लाह ताला तमपर रहम करे

फिर छीक मारने वाला यह कहे

“व यगफेरुल्लाहो लना व लकुम “

अल्लाह ताला हमें और तुम्हें बखश दे।

1. मामूली मज़ाक करना एक काबिले तारीफ़ फ़ैल (अमल) खुश मेज़ाजी की निशानी और भाई की राहत का मूजिब है।

2. इमाम मोहम्मद बाकिर (अ.स.) से रवायत है कि आपने फरमाया जो शख्स लोगों के दरमियान हँसी मज़ाक करे अल्लाह ताला उसे पसन्द करता है उस नक़्त तक कि वह नाशायस्त ज़बान इस्तेमाल न करे।

3. इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) ने फ़रमाया, इन्सान को ज़्यादा हँसी मज़ाक से परहेज़ करना चाहिये क्योंकि यह इन्सान को इज़्जत से महरूम कर देती है उसके वेकांर और रोब का खात्मा कर देती है और दुसरोँ से दुश्मनी पैदा कर देती है।

4. हँसना अगर मुस्तराहट और-रूई की शकल में हो तो मुस्तहसन है क्योंकि एक मोमिन को चाहिये कि खश व खरम रहे और हँसे मुस्कराये और हँसे मुस्कराये, नयह कि मायूस और बेज़ार बेज़ार सा रहे।

5. बहुत ज़्यादा हँसना बेवकूफी की अलामत है यह दिल को मुर्दा कर देती है और इन्सान के ईमान कर देती है।

कहकहे लगाकर हँसना एक बेजा फ़ेल है जब आप इस तरह हँसें तो यह दुआ पढ़े:

“अल्लाहुम्मा-ला-तमकुतनी”

ऐ परवरदिगार मुझसे नाखुश न होना।

6. रसूले अकरम (स.अ.) से रवायत है कि आपने फ़रमाया, किसी शख्स तो वह अल्फ़ाज़ बोलने का हक़ हासिल नहीं है कि जो बोलने वाले ने पोशीदा रखे हो बजुज़ इसकि वे दानाई की बातें हो जिनकी तशहीर (प्रचार) ज़रूरी हो या उनमें खुद उस शख्स की अच्छाई का तज़क़िरा किया गया हो।

7. यह ज़रूरी है कि जो शख्स आपसे मेल जोल रखे आप उसके अच्छे साथ बनें।

8. अगर आप किसी शख्स को पसन्द करते हो अपनी पसन्द का इज़हार उस पर कर दें क्योंकि ऐसा करने से दोस्ती बढ़ती है और बाहमी मोहब्बत की पुख्तगी का मूजिब बनता है।

9. जब आप एक मुसलमान भाई से मोहब्बत करते हों तो ज़रूरी है कि आप उसके नाम के साथ साथ उसके वालिद, उसके कुंबे और रिश्तेदारों के नाम जानते हों क्योंकि दोस्ती और भाई चारे में यह एक लाज़मी बात है।

10. अपने और अपने दोस्तों के भेद जाहिर न करें क्योंकि यह चीज़ शर्म व हया का खातिमा कर देती है।

11. अपने भाईयों से खुशदिली के साथ मिलें, क्योंकि लोगों से खुशदिली के साथ मिलना दुश्मनी को दूर करता है।

12. लोगों के साथ झगड़ा न करें क्योंकि ऐसा करना शख्सि वेकार ,आली ज़र्फी और करीमुन नफ़सी का खातिमा कर देता है।

इमाम जाफरे सादिक (अ.स.) ने फरमाया ,तीन चीज़ें इस दुनिया और आखेरत के लिये भी अच्छी हैं

क) उन लोगों को माफ करना जिन्होंने तुम पर जुल्म किया है।

ख) उस शख्स के साथ तहम्मूल के साथ पेश आना जिसने तुम्हारे साथ गुस्ताखी किया हो।

ग) उस शख्स से मेल जोल रखना जो तुम्हारे साथ अपनी दोस्ती खत्म करना चाहता हो।

13. गुस्सा न करें बल्कि उस पर काबू पायें क्योंकि गुस्से पर काबू पाना इस दुनिया और आखेरत में इज्जत का मूजिब है।

14. इमाम जाफरे सादिक (अ.स.) ने फरमाया ,जो शख्स हाकिमाना हैसियत रखते हुए अपने गुस्से पर काबू पा लें,वह कयामत के दिन ईमान से पुर होगा और उसे परेशानी और अफसुर्दगी से बचा लिया जायेगा।

15. इमाम मोहम्मद बाकिर (अ.स.) ने फरमाया, जो शख्स आला (बलन्द) मर्तबा रखतेहए अपने गुस्से पर काबू पाले,अल्लाह ताला इस दुनिया और आखेरत में भी उसकी इज्जत बढायेगा।

16. अल्लाह ताला के नाम का विर्द करना और हर जगह और हर हालत में उसे याद रखना अच्छी बात है।

17.मोमिन के मजमे में एक मोमिनको याद करना इस अम्र का मुजिब है कि अल्लाह ताला उस याद करेगा।

18. जो शख्स अल्लाह ताला को ऐसे लोगों के दरमियन याद करे जो ग़ाफ़िल हों वह उस शख्स की तरह है जो अल्लाह की राह में जिहाद करता है।

19. अगर कुछ लोग जमा हों और वे (अल्लाह की खालक्रियत,उसके सिफ़ात, उसके पैग़ाम और उसकी बड़ाई के बार में ग़ौर करके) उसको याद न करें और

रसूले अकरम (स.अ.) पर दरूद न भेजें तो उन लोगों का इजतेमाअ कयामत के दिन पछतायेगा।

20. एक इजतेमाअ से पूरा सवाब हासिल करने की तरकीब यह है कि जब एक शख्स उसमें से उठे तो यह आयत पढ़े

“सुब्हाना रब्बेका रब्बिल इज्जते अम्मा यसेफून व सलामुन अ-लल मुरसलीना वल हम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलामीन”

तम्हारा परवरदिगार जो इज्जत का मालिक है वह उससे बहुत बलन्द है जो सिफ़ात वे उसके लिये बयान करते हैं सलाम हो सब अंबिया पर दोनो जहानो का परवरदिगार आल्लाह ही है जो तमाम तारीफों का मुस्तहक है (सुर-ए-साफ़ात आयत 180—181)

21. रवायत है कि इमाम मोहम्मद बाकिर (अ.स.) ने एक शख्स से पुछा क्या तुम खिल्वत में एक दुसरे से मिलते हो और अहले बैत (अ.स.) के इल्म और फ़जायल के बारे में जो कुछ कहना चाहो कहते हो ?

उसने जवाब इस्बात में दिया

22. रवायत है कि रसूले अकरम (स.अ.) ने फ़रमाया, तुफ़ है उनपर जो जुमे के दिन अपने आप को दुनियावी मामलात से आज़ाद न कर सकें, ताकि अपने दीन के बारे में कुछ सीखें।

23. यह रवायत होता है अल्लाह ताला उसके लिये बेहिशत की जानिब एक रास्ता खोल देता है इसकी हकीकत यह है तालिबे इल्म से इजहारे मसरत के तौर पर फ़रिश्ते उसके लिये अपने पर फ़ैला देते और ज़मान व आसमान में जो कुछ है, हत्ता कि समन्दरो की मछलियाँ भी उस तालिबे इल्म के लिये मग़फ़ेरत की दुआ करती हैं चुनांचे एक आलिम को क आबिद पर वही फ़ौकियत (प्रधानता) हासिल है जो चौदहवी के चाँ को सितारो पर है।

रवायत है कि लोगों को चाहिये कि वे एक दुसरे से मुलाकात करें, अहादीस नक़ल करें और फिर मुजाकिरा करें क्योकि अहादीस दिलों को जिन्दगी बख़्शती है सच तो यह है कि तलवारों की तरह दिलों को भी ज़ंग लग जाता है और अहादीस वह ज़ंग उतार कर दिलों को जिन्दा को देती है।

(1) इन्सान चाहे कितना ही अक्लमंद क्यो न हो उसे चाहिये कि अपने मामलात में दूसरों से मश्चिरा कर ले,क्यों जो शख्स किसी से मश्चिरा कर लेता है उसे पछताना नही पड़ता।

(2) इमाम अली (अ.स.) से रवायत हैकि पने फ़रमाया, जो शख्स दूसरो की राय के मुक़बले में अपनेको ज़्यादा सायब (उचित) समझता हो और किसी से मशिवरा न करता हो अपने आप को मुश्किलात में मुबतला कर लेता है” -

(3) जिस शख्स से आप मश्चिरा करे उसके लिये लाज़िम है कि वह अक्लमन्द, दीनदार, आपका भाई और अच्छाई चाहने वाला हो इसके अलावा आपको चाहिये

कि उसे मामले के तमामपहलुओं से आगाह करदें ताकि उसे तमाम हालात का उसी तरह इल्म हो जाये जैसे कि खुद आपको-जब आप किसी ऐसे शख्स से मश्हिरा करें और वह आपके लिये राह अमल मोअययन (निश्चित) कर दे तो उसके मश्हिरे के खिलाफ़ अमल न करे, अगर आप ऐसा करेंगे तो आपके दुनिया.और आखेरत के तमाम मामलात खराब हो जायेंगे।

(4) जब के अलावा दूसरे मामलात में बीवी से मश्हिरा करना मुनासिब नहीं, और एक बुजदिल, कंजूस और तामेअ

शख्स से भी मश्हिरा नहीं करना चाहिये।

(5) जब आपका कोई दीनी भाई आपसे मश्हिरा करे तो आप उसे वही बात बतायें जो उसके लिये मुफ़ीद हो।

(6) इमाम अली (अ.स.) ने फ़रमाया : मैं उस शख्स से नफ़रत करता हूँ जिससे एक मुसलमान मश्हिरा करता है और वह जानता है कि उसके लिये क्या बेहतर है लेकिन उसे नहीं बताता।

(7) इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) से रवायत है कि आपने फ़रमाया : दीनी भाईयों में मौहब्बत और ताल्लुक के बरकरार रहने का इन्हेसार इस पर है कि जब वह हज़र में हों तो एक दुसरे के यहाँ आयें जायें और जब सफ़र में हों तो एकदुसरे के साथ खत व किताबत करें

(8) जब आप खत लिखने लगे तो उसकी शरूआत “बिस्मिल्लाह-हिर्रहमा-निर्रहीम” से करें।

(9) खत का जवाब देना वाजिब है।

## मकान के सिफात

1. एक मकान की नहूसत इसबात में है कि उसका सेहन छोटा और हमसाये बुरे हों

2. हर वह मकान जो इन्सान कि जरूरत से ज़्यादा हो, वह क़यामत के दिन उसके लिये तकलीफ़ का मूजिब होगा।

3. रसूले अकरम (स.अ.) से रवायत है कि आपने फ़रमाया: अगर कोई शख्स नुमाइश के तौर पर या अपनी फ़ौक़ियत जताने की खातिर मकान तामीर करे ताकि लोग उस मकान की तारीफ़ सुने और उसे देखने आयें तो क़यामत के दिन उस मकान को ज़मीन की सातवीं तह तक आग लगा दी जायेगी और वह उस शख्स के गले में लटका दिया जायेगा और जहन्नम की तह तक उसे कोई सहारा मैयस्सर नहीं होगा लेकिन यह कि वह तौबा कर ले।

हज़रत (स.अ.) से दरियाफ़त किया गया: या रसूलल्लाह (स.अ.) . नुमाइश के तौर पर या फ़ौक़ियत जताने की खातिर मकान तामीर करने से क्या मुराद है ?

आपने फ़रमाया : इसका मतलब यह है कि वह मुकाबलतन अपनी ज़रूरत से बड़ा मकान बनाये ताकि वह अपनी दौलतमंदी का इज़हार कर सके और अपने भाइयों पर अपनी बड़ाई जताये।

4. एक रवायत में है कि इन्सान को एक बिस्तर अपने लिये एक अपनी बीवी के लिये और एक मेहमानों के लिये रखना चाहिये, इससे ज़्यादा शैतान का माल है।

5. कुर्आन मजीद की तिलावत से अपने घर को मुनव्वर करते रहें अपने घर को ज़िक्रे खुदा से खाली न छोड़ें बल्कि उसमें ख़ूब नमाज़े पढ़ा करें।

6. एक ऐसे घर में रात से सुबह तक वक्त गुज़ारना मकरूह है जिसमें पर्दा और खिल्वत मैयस्सर न हो।

7. इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) से रवायत है कि आपने फ़रमाया : यह मुनासिब है कि कि तुम अपने घर में झाड़ू दो, कूड़ा- करकट बाहर निकाल फेंको और उसे रात भर पड़ा न रहने दो, घर का कुड़ा दरवाज़े के पीछे भी जमा न किया करो। घर के दरवाज़े बन्द कर दो और जिन बर्तनों में खाने-पीने की चीज़े हों उन्हें ढाँक दो।

8. जब आप घर में अकेले हों तो न वहाँ रहें और न सोयें।

9. अपने पड़ोसी के घर में कभी न झाँके।

10. पालतू जानवर खास कर कबूतर, मुर्गियाँ, भेड़ें और बकरियाँ गर में रखना मस्तहब है।

11. घर में कुत्ता रखना मकरूह है सिवाय उन घों के जो आबादी से दूर फ़ासले पर हों

## घर से बाहर जाना

जब आप घर से बाहर जाये तो यह दुआ पढ़ें :

“ बिस्मिल्लाह-हिरहमा-निरहीम0

आमन्तो बिल्लाहे0 तवक्कलतो अ-लल लाहे 0 माशाल्लहो 0ला-होला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहे 0 “

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है -----में अल्लाह पर ईमान रखता हूँ अल्लाह पर भरोसा करता हूँ और जो अल्लाह चाहे उसे कुबूलं करता हूँ कोई ताकत और कुव्वत नहीं सिवाय उसके जो अल्लाह से (मिलती) है।

## घर में दाखिल होना

जब आप घर में दाखिल हों तो सूर-एऐइख्लास पढ़ें (पीछे लिखा जा चुका है) और अहले खाना को सलाम कहें।

## तिजारत और ज़राअत (व्यासाय और कृषि)

1 .रसूले अकरम (स.अ.) से रवायत है कि आपने फ़रमाया, ख़दा की क़सम मेरे पैरूओं में सूदख़ोर उससे ज़्यादा पोशीदा है जितनी वह जगह जहाँ एक चींटी चिकने पत्थर पर अपना पाँव रखती है।

2 . कारोबार और तिजारत काबिले तहसीन चीज़ है, खासकर जब कारोबार में इन्सान यह इरादा रखता हो , कि वह दौलत कमाये और उसे अच्छे कामों पर सर्फ़ करे वह अपने और अपने अहले ख़ाना के खर्चों को पूरा करे और उन्हें इस क़बिल बनाये कि वे आराम देह जिन्दगी गुज़ारें और खुद वह शख़्स भी अपनी हाजत दूसरों के पास ले जाने से बचा रहे।

3 .अली बिन हम्ज़ा कहते हैं, मैं ने इमाम मूसा काज़िम (अ) को देखा कि बेल्चा हाथ में लिये काम कर रहे हैं जब कि आप एड़ी से चोटी तक पसीने में भींगे हुए थे तब इमाम (अ.स.) ने फ़रमाया रसूले अकरम (स.अ.) और इमाम अली-ए मुर्तज़ा समेत मेरे तमाम बुजर्ग भी खेतों में अपने हाथ से काम करते थे क्योंकि ख़ुदा के पैगम्बरो,उनके औसिया और सालेह बन्दो का यही तरीका रहा है।

4 .रवायत है कि रसूले अकरम (स.अ.) ने फ़रमाया, जो शख़्सअपने ख़ानदान के रोज़ी रोटी का बोझ किसी दुसरे के सर पर डाल दे वह मलऊन है।

5 . रवायत है कि इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) को बताया गया कि एक शख्स कहता है मैं घर पर रहता हूँ नमाज़े पढ़ता हूँ रोज़े रखता हूँ और अपने परवरदिगार की परस्तिश (पूजा) करता हूँ इस लिये मेरी रोज़ी तो यक्रीननआ जायेगी। इमाम (अ.स.) ने फ़रमाया,यह बात कहने वाला उन तीन लोगों में से है जिनकी दुआ कुबूल नहीं होती।

एक हदीस में है कि किसी शख्स ने इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) से कहा आप दुआ करें कि अल्लाह मुझे रोज़ी दे आपने फरमाया ,तुम उस तरह रोज़ी तलब करो जैसे अल्लाह ने उसका हुक्म दिया है फिर मैं तुम्हारे लिये दुआ भी करूँगा।

अगरचे रोज़ी कमाना एक पंसदीदा काम है फिर भी उसके लिये इतनी कोशिश करना भी दुरुस्त नहीं कि इन्सान उसी का होकर रह जाये।

6. अगर कोई शख्स अपनी रोज़ी हराम तरीकों से कमाता है तो उसकी हलाल रोज़ी में उतनी ही कमी कर दी जाती है फिर क़यामत के दिन उससे हराम रोज़ी के बारे में पूछ ताछ भी की जायेगी।

7. ख़रीद व फरोख्त के वक़्त क़समें खाने से परहेज़ करें।

8. माले तिजारत के ऐब छुपाने , बेचते वक़्त उसकी तारीफ़ करने और ख़रीदते वक़्त उसे घटिया करार देने से बचें रहें।

9. ख़रीद व फरोख्त के मामलात में सख्त गीरी न करें।

10. बाज़ार में दाखिल होते वक़्त यह दुआ पढ़ें :

“ अल्लाह हुम्मा इन्नी अस-अलोका खै-रहा व खैरा अहलेहा”

ऐ परवरदिगार में तुझसे इस बाज़ार में यहाँ के लोगों की तरफ से मुनाफा तलब करता हूँ।

11. रवायत है कि इमाम अली-ए -- -मुर्तजा (अ.स.) ने फरमाया ,बाज़ार में अल्लाह को बहुत याद करो खासकर जब लोग अपने दुनियावी मामलात में लगे हुए हों ताकि यह तुम्हारे गुनाहों का कप्फारा बने,तुम्हारे नेक कामों में इज़ाफे का मूजिब बने और तुम्हारा नाम गाफिल लोगों के साथ न लिखा जाये।

12. खरीदार को धोका देने से बाज़ रहो।

13. ज़खीरा अन्दोजी (जमा करना) मना है जैसा कि रसूले अकरम (स.अ.) से रवायत है कि जो कोई खरीदता है और बेचता है वह अपनी रोज़ी हासिल करता है लेकिन जो शख्स कोई जिन्स रोके रखता है,ताकि वह मँहगी हो जाये वह मलऊन है।

14. बेहतरीन पेशा काशतकारी है क्यो कि यह अम्बिया-ए-मुर्तजा (अ.स.) और उनके जा-नशीने और नेक लोगों का पेशा रहा है।

15.मोअतबर अहदीस में है। कि इमाम अली (अ.स.) बेलचे के साथ में काम करते थे और ज़मीनें आबाद करते थे।

16. हदीस में है कि खेती बाड़ी करो और पेड़ उगाओ खुदा की कसम लोग कोई ऐसा काम नहीं करते जो इससे ज़्यादा जायज़ और मुनासिब हो।

17 जब आप बीज बोयें तो यह आयत पढ़ें:

“अ-फ़रा अयतुम तहरोसूना 0 अ- अनतुम तज़-रऊ-नहू अम नहनुज ज़ारेऊन 0

और क्या तुमने गौर किया कि जो कुछ तुम बोते हो, आया तुम उसे उगाते हो या हम उगाने वाले हैं (सूर-ए- वाक़ेआ आयत 63)

जब आप कोई पौधा लगायें तो यह दुआ पढ़ें:

‘ व-मसलो कले-मतिन तय्ये -बतिन क-शजा-रतिन तय्ये-बतिन असलोहा साबितुंव व फर-ओहा फिस-समाये तूअती उको-लहा कुल्ला हीनिन बे-इज़्ने रब्बेहा’

अच्छी बात एक पाकीज़ा पेड़ की तरह है कि जिसकी जड़ मज़बूत है उसकी शाखें आसमान से जा लगी हैं और वह हर लम्हा अपने परवरदिगार के ईज़्ज से फल दौता है (सूर-ए-इब्राहीम आयत 24.25)

इमाम जाफ़र सादिक (अ.स.) से रवायत है कि आपने फ़रमाया, मेवादार दरख्त न न क्योमकि ऐसा करना नुज़ूले अज़ाब का मूजिब है।

(1) रसूले अकरम (स.अ.) से पूछा गया कि कौन सी जिन्स अच्छी है ? आपने जवाब दिया सबसे अच्छी जिन्स वह ज़रई पैदावार है जो इन्सान ने उगाई हो और उसके वाजिबात कर दिये हों।

(2) इस्लाम कहता है कि ज़राअत दौलत का सर-चशमा है इसबिना पर इमाम अली (अ.स.) न फरमाया है कि अगर किसी शख्स के पास पानी और ज़मीन है और फिर वह तंगदस्त हो तो अल्लाह उसे अपनी रहमत से महरूम कर देता है।

## मुसाफ़रत

1. इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) ने फ़रमाया, जुमे के दिन सफ़र करना मकरूह है, कि कही ऐसा न हो कि नमाज़े जुमा क़ज़ा हो जाये।
2. जब आप सफ़रका इरादा करे तो हस्बे तौफ़ीक सदका ज़रूर दें।
3. सफ़र पर रवाना होने से पहले सूर-ए-क़द्र की तिलावत करें। (इन सबको किताब में लिखा जा चुका है)

सूर-ए-क़द्र

बिस्मिल्लाह हिर्हमा निर्हीम 0

इन्ना अन-ज़ल्नाहो फ़ी लय-लतिल क़द्रे 0 वमा अद-राका मा लय-लतुल क़द्रे0  
लय-लतुल क़द्रे खैरूम मिन अल्फे शाहिरन0 तनज़-ज़लुल मलायकतो वरूहो फीहा बे  
इज़्ने रब्बेहिम मिन कुल्ले अमरिन 0 सलामुन हेया हत्ता मतलाइल फज़्र 0”

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है। बेशक हमने इसको शबे क़द्र में नाज़िल किया और तुम्हें क्या मालूम कि शबे क़द्र क्या है शबे क़द्र (मर्तबा और अमल में) हजार महीनों से बेहतर है इस रात फरिश्ते अपने रब

की इजाजतसे साल भर के लिये हर हुक्म लेकर नाज़िल होते हैं और रूहे अमरी आती है यह रात तुलू-ए-फ़ज़ तक सरापा सलामती है

1.रसूले अकरम (स.अ.) से रवायत है कि आपने परमाया;इन्सान घर से रवाना होते वक़्त अपने खानदान में इससे बेहतर जा-नशीन नहीं छोड़ता कि रवानगी से पहले दो रकअत नमाज़ अदा करें और फिर कहें :

“अल्लाहुमा इन्नी असतौदेओका नफ़सी व अहली व माली वज़रीयति व दुनयाया व आखेरती व अमानती व खातेमता अमली”

या अल्लाह में अपनी ज़िन्दगी ‘अपना घर ‘अपना माल ‘अपनी औलाद ‘दुनिया व आखेरत ‘अपनी अमानतों और अंजाम तेरे सुपुर्द करता हूँ।

अकेले यानी किसी दोस्त के बगैर सफ़र करना मकरूह है।जब आप अपने खाने पीने की चीज़ों में अपने दोस्तों के साथ शरीक हों तो यह सुन्नत है कि पहले आप लोग अपना अपना सामान खुर्द व नौश निकाले और एक दूसरे के सामाने रख दें।

(1) इमाम अली (अ.स.) ने फ़रमाया, जब एक शख्स अपने शहर में हो तो उसकी जवां मर्दी इसमें है कि वह कुर्आने मजीद पढ़े, उलमा कीसोहबत में फ़िका (धर्म शास्त्र) और दूसरे उलूम हासिल करे और नमाज़े जमाअत बा-कायदागी से अदा करे लेकिन जब वह सफ़र में हो तो उसकी मर्दानगी इसमें है कि वह खाने पीने का ज़्यादा सामान दूसरो को दें और सवार होते, उतरते रूकते और उठते अल्लाह को बहुत याद करें।

(2) एक हम सफ़र मोमिन भाई की मदद करना बड़े सवाब का काम है।

(3) जब इन्सान सफ़र में होतो उसे मुनदर्जा ज़ैल दुआ पढनी चाहिये।

“ अल्लाहुम्मज- अल मसीरी एबरन व समती तफ़क्कुरन व कलामी ज़िकरन  
“

ए परवरदिगार मेरे सफ़र को ज़रिय- ए इबरत,मेरी खामोशी को गौर व फ़िक्र  
और मेरे कलाम को अपनी याद बना दे।

(4) मोमिनीन को खुश आमदीद कहना और उनकी मशाइयत (साथ चलना)  
करना एक पंसदीदा अमल है।

रवायत है कि जब रसूले अकरम (अ.स.) किसी मोमिन को अल विदा कहते तो  
यह दुआ पढते थे।

“रहमाकुमुल्लाहो व ज़व्वादाकुमुत तक़वा व वज्जहाकुम एला कुल्ले खैरिव व  
क्रज़ा लकुम कुल्ला हा- जतिन व सल्लामा दीनाकुम व दुनयाकुम व रद-मुस्लेमीन  
”

अल्लाह तुम पर अपने करम की बारिश करे, परहेज़गारी को तुम्हारे रखते सफ़र  
का हिस्सा बनायें तुम्हें तमाम खुशियाँ नसीब हों और तुम्हारी तमाम ख्वाहिशें पूरी  
हों, अल्लाह तुम्हारे ईमान और तुम्हारी जान व माल को सही व सलामत रखे  
तुम्हें ब-खैरियत वापस लाये और यहाँ आकर तुम अपने बीवी बच्चों को महफूज़  
पाओ।

जब कोई शख्स सफ़र से वापस आये तो उससे (खासकर हुज्जाजे बैयतुल्लाह और जुव्वारे (अइम्मा से) गले मिलना चाहिये।

रवायत है कि जब रसुले अकरम (स.अ.) मक्के से आने वाले किसी शख्स से मिलते थे तो यह दुआ पढ़ते थे।

“क़बे-लललाहो मिन्का व अख-लफ़ा अलैयका ना- क- तका व ग़फ़रा ज़म्बका”

अल्लाह ताला तुम्हारी इबादत कुबूल करे तुम्हारे पिछलों की रोज़ी बरकरार रखे और तुम्हारे गुनाह बख़्श दे।

आखिर में हम अल्लाह ताला की हम्द व सना (तारीफ़) करते हैं जो तमाम जहानों का परवरदिगार है।

[[अलहम्दो लिल्लाह किताब (इस्लामी तालीम ) पूरी टाईप हो गई खुदा वंदे आलम से दुआगौ हूं कि हमारे इस अमल को कुबुल फरमाए और इमाम हुसैन (अ.स.) फाउनडेशन को तरक्की इनायत फरमाए कि जिन्होने इस किताब को अपनी साइट (अलहसनैन इस्लामी नेटवर्क) के लिये टाईप कराया। 15.11.2017

## फेहरिस्त

पेश लफ़्ज.....	2
लिबास.....	4
अरायशे जमाल .....	11
खुद्वारी .....	18
पीने का पानी .....	20
आदाबे तज़वीज.....	21
कुंबा .....	22
बीवी के फ़रायज़ (पत्नि के कर्तव्य).....	28
शौहर के फ़रायज़.....	28
औलाद .....	29
बेटी और बहन की बरकत .....	29
तलबे औलाद .....	30
बच्चे की पैदाइश .....	32
हजामत ,खाना और अक्रीका.....	33
शीर-खार्गी (दूध पिलायी).....	36

तालीम व तरबियत (शिक्षा-दीक्षा).....	36
वालदैन (माता -पिता).....	38
सफ़ाई और तहारत.....	40
दाँत साफ़ करना.....	41
बाल तर्शवाना .....	43
मुँछे तराशना .....	44
दाढी रखना.....	45
नाखून काटना.....	45
कंघा करना .....	46
इत्र, खुशबू और तेल का इस्तेमाल .....	46
बदन पर तेल लगाना .....	47
गुस्ल.....	48
सोना, जागना और बैतुल खला में जाना.....	52
सोने के आदाब .....	52
पाखाने जाना.....	62
बीमारिया और उनका इलाज.....	64

मुआशरती हुक्क (सामाजिक अधिकार).....	70
सिल-ए-रहमी.....	71
हमसायों के हुक्क (पडोसियों के अधिकार).....	72
दीनी भाईयों के हुक्क.....	73
छींक .....	88
मकान के सिफात .....	95
घर से बाहर जाना .....	97
घर में दाखिल होना .....	97
तिजारत और ज़राअत (व्यासाय और कृषि).....	98
मुसाफ़रत.....	102